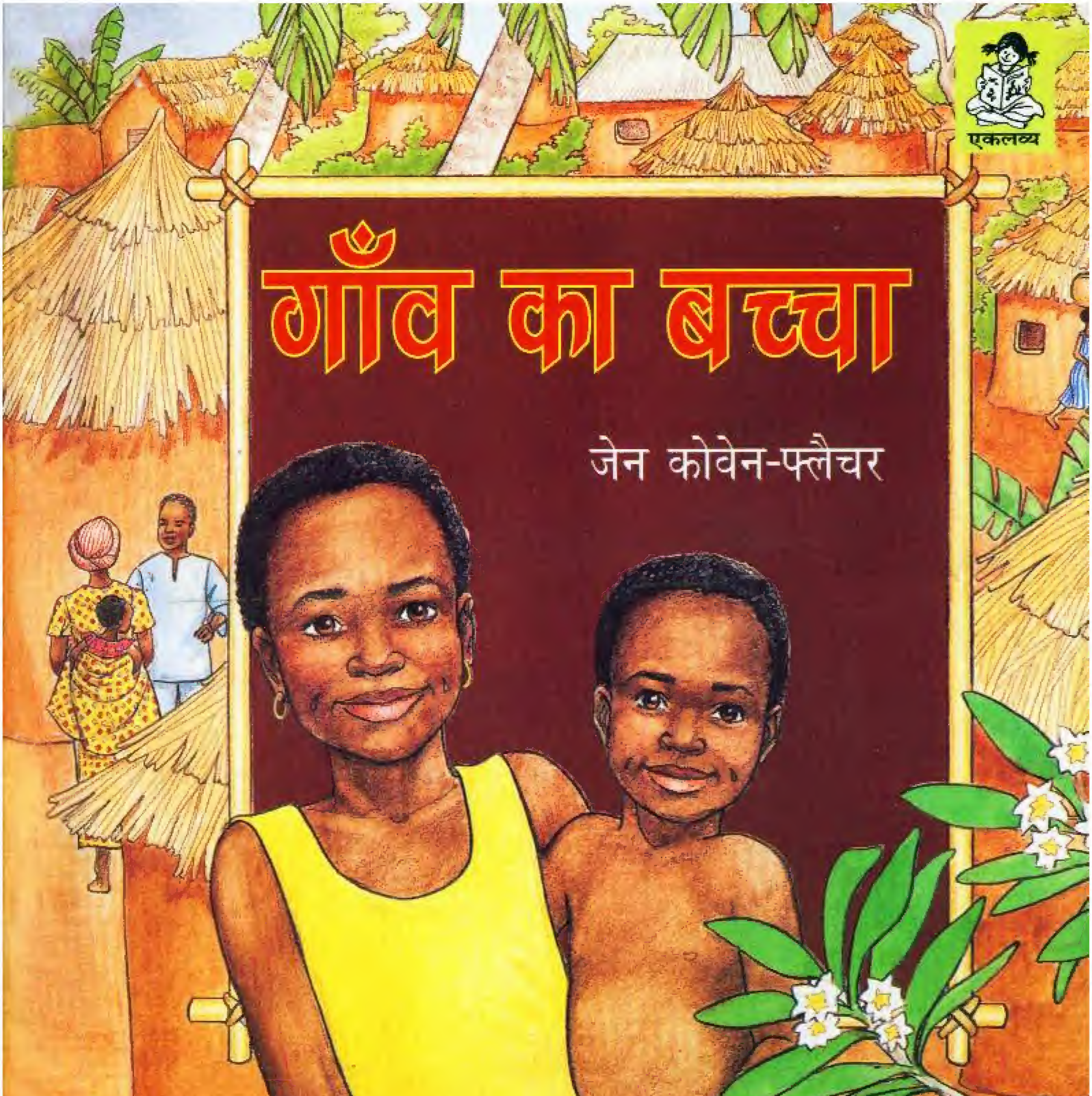
एकलव्य
गाँव का बच्चा
जेन कोवेन-फ्लैचर
SCHOLASTIC

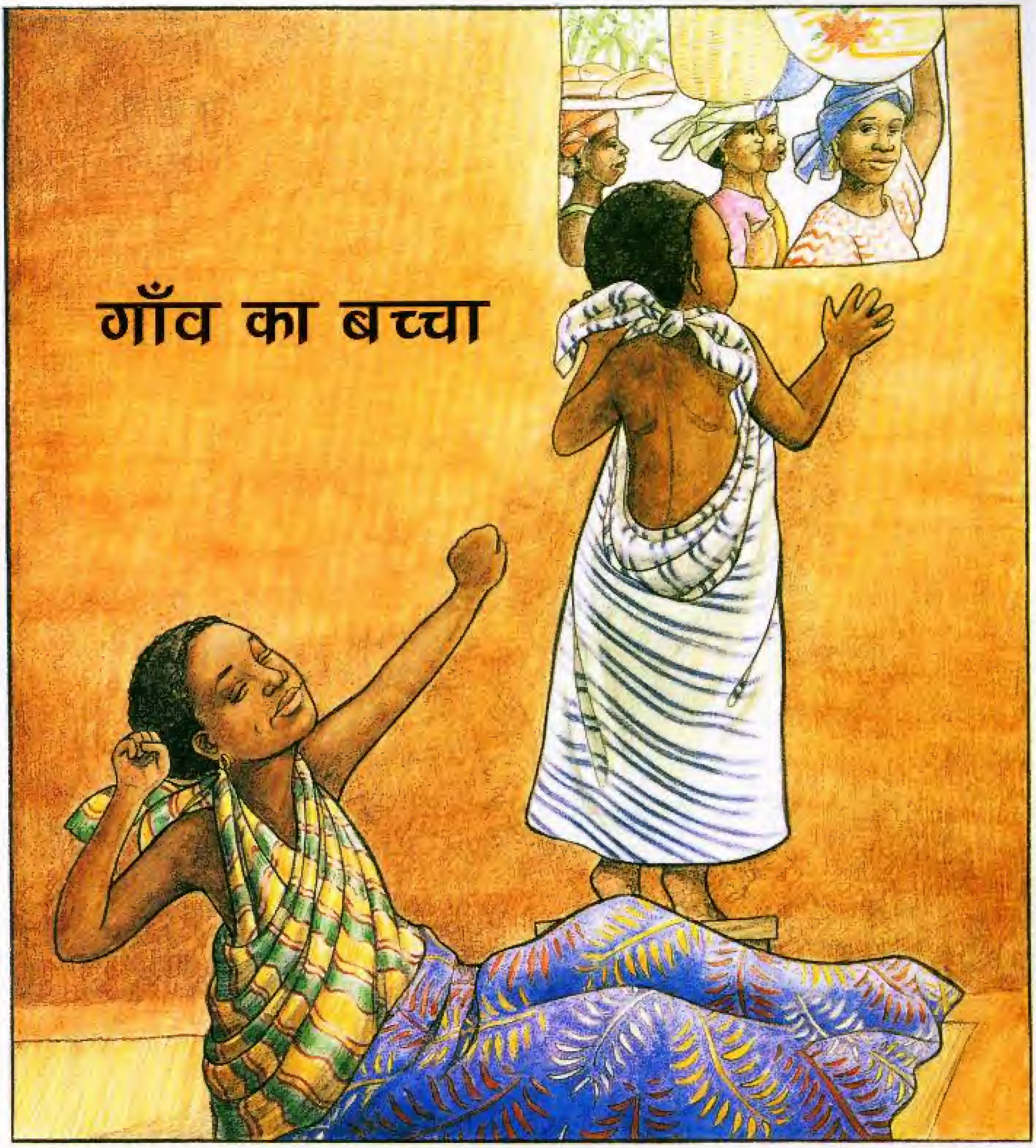
गाँव का बच्चा

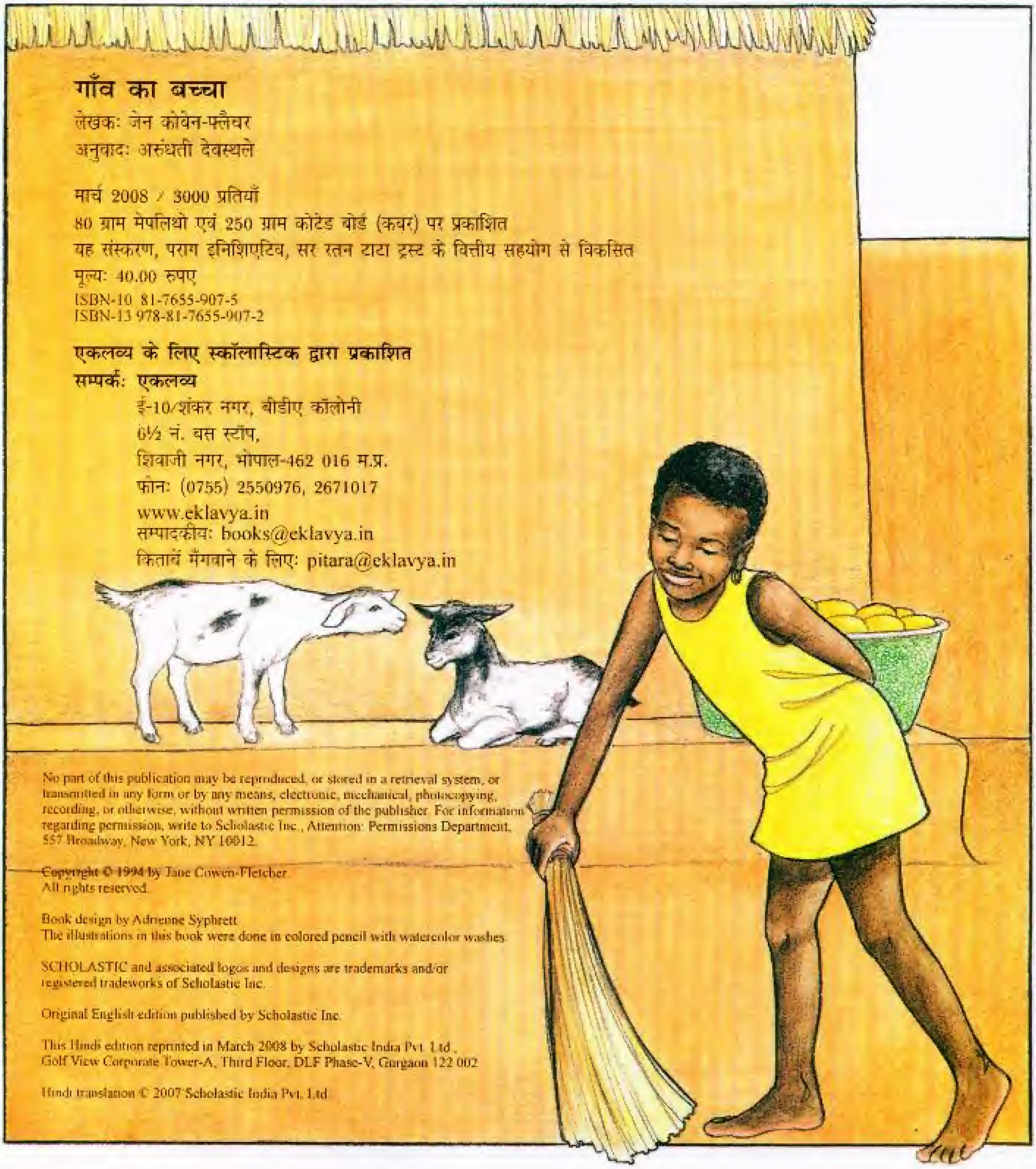

गाँव का बच्चा

लेखकः जेन कोवेन-फ्लैचर
अनुवादः अरुंधती देवस्थले

मार्च 2008 / 3000 प्रतियाँ
80 ग्राम मेपलिथो एवं 250 ग्राम कोटेड बोर्ड (कवर) पर प्रकाशित
यह संस्करण, पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
मूल्यः 40.00 रुपए
ISBN-10 81-7655-907-5
ISBN-13 978-81-7655-907-2

एकलव्य के लिए स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित

सम्पर्कः एकलव्य
ई-10/शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी
6½ नं. बस स्टॉप,
शिवाजी नगर, भोपाल-462 016 म.प्र.
फोनः (0755) 2550976, 2671017
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

No part of this publication may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without written permission of the publisher. For information regarding permission, write to Scholastic Inc., Attention: Permissions Department, 557 Broadway, New York, NY 10012.

Copyright © 1994 by Jane Cowen-Fletcher
All rights reserved.

Book design by Adrienne Syphrett
The illustrations in this book were done in colored pencil with watercolor washes.

SCHOLASTIC and associated logos and designs are trademarks and/or registered tradeworks of Scholastic Inc.

Original English edition published by Scholastic Inc.

This Hindi edition reprinted in March 2008 by Scholastic India Pvt. Ltd.,
Golf View Corporate Tower-A, Third Floor, DLF Phase-V, Gurgaon 122 002

Hindi translation © 2007 Scholastic India Pvt. Ltd

गाँव का बच्चा

जेन कोवेन-फ्लैचर

अनुवाद अरुंधती देवस्थले

एकलव्य के लिए स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित

सूरज धीरे-धीरे ऊपर आकाश में चढ़ने लगा था।

लेकिन गाँव में लोग कब के जाग चुके थे।

आज बाज़ार का दिन था।

"येमी," माँ ने कहा, "आज बाज़ार में तुम अपने छोटे भाई का ध्यान रखना। मैं तो आम बेचने में बहुत व्यस्त रहूँगी।"

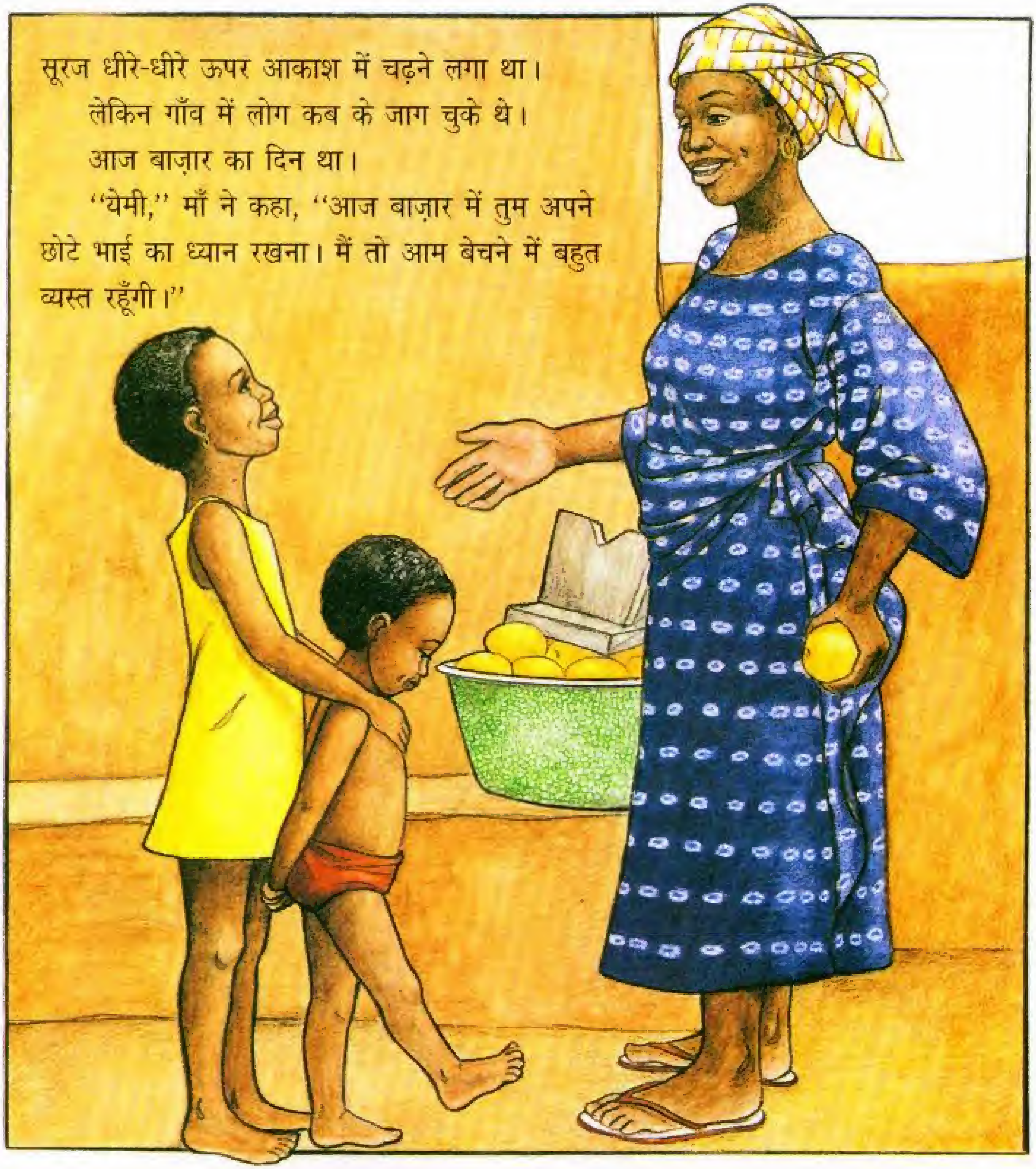

"आओ, कोकू," येमी ने कहा, "आज तुम्हारा ध्यान मैं रखूँगी, अकेली मैं!"

"तुम अकेली?" माँ ने येमी की तरफ देखकर मुस्कराते हुए कहा। माँ सब जानती थी।

माँ ने आम की टोकरी उठाई। येमी ने कोकू को पीठ पर बैठा लिया। येमी को माँ के साथ घर से निकलते हुए बहुत बड़ी हो जाने का एहसास हो रहा था।

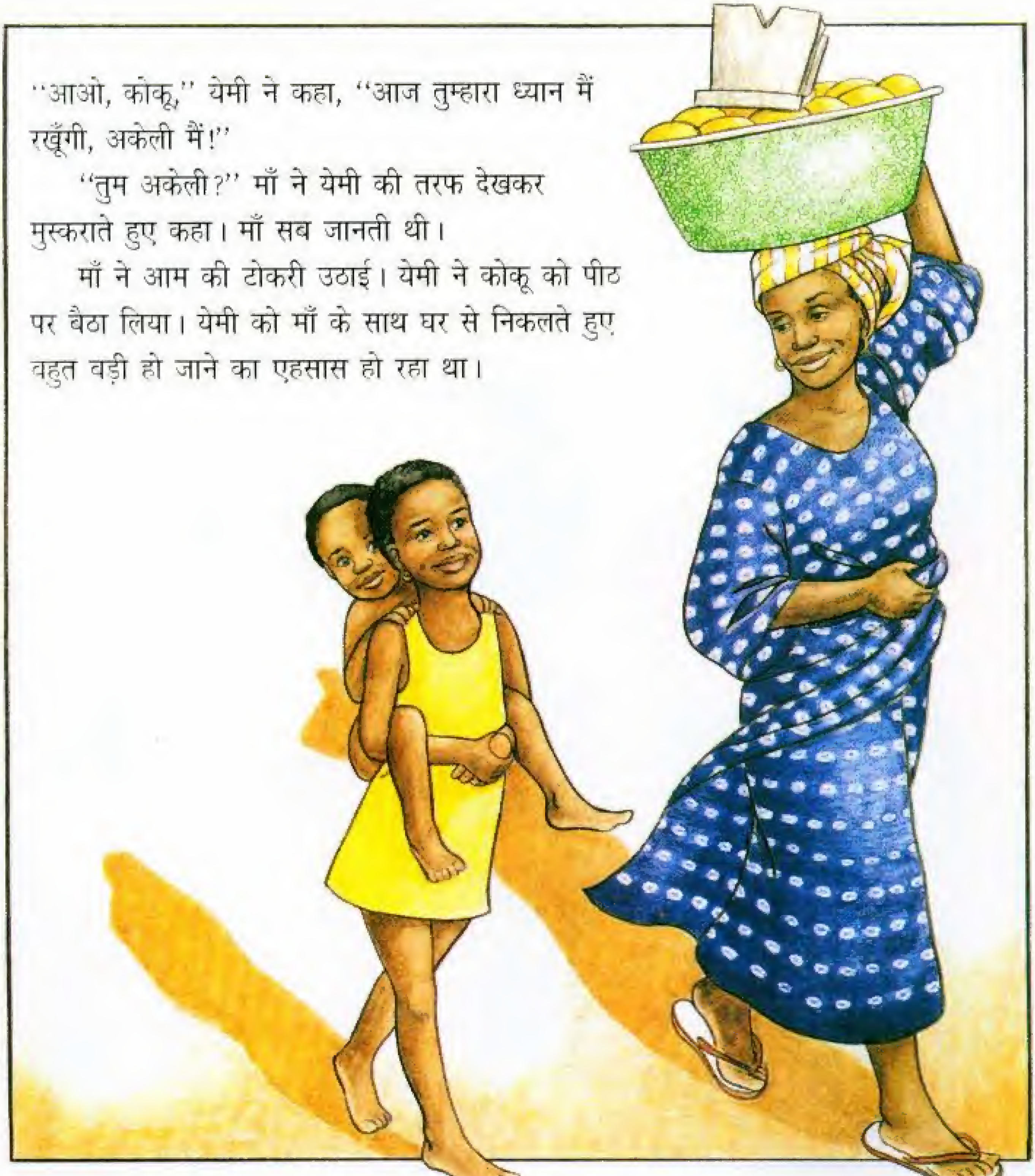

गाँव के अन्दर जाने वाले लोगों के झुण्ड में वे शामिल हो गए। आस-पास, सभी जगह से लोग अपनी चीज़ें बेचने और अपनी ज़रूरत की चीज़ें खरीदने आ रहे थे। बाज़ार का दिन एक-दूसरे से मिलने का अवसर भी होता है।

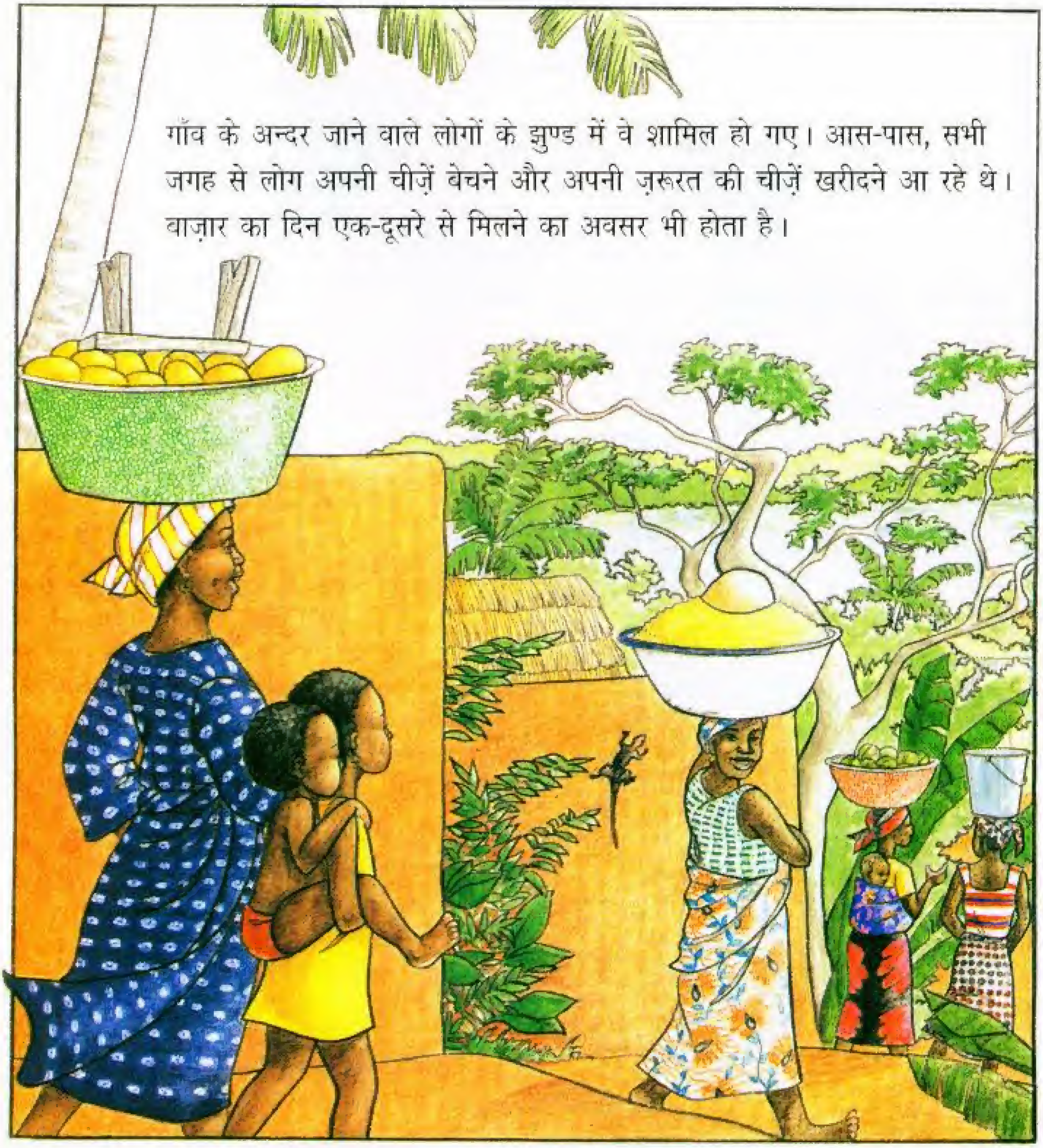

गाँव में घुसते ही मेल-जोल शुरू हुआ।

"हलो!"

"कैसी हो तुम?"

"घर पर सब कैसे हैं?"

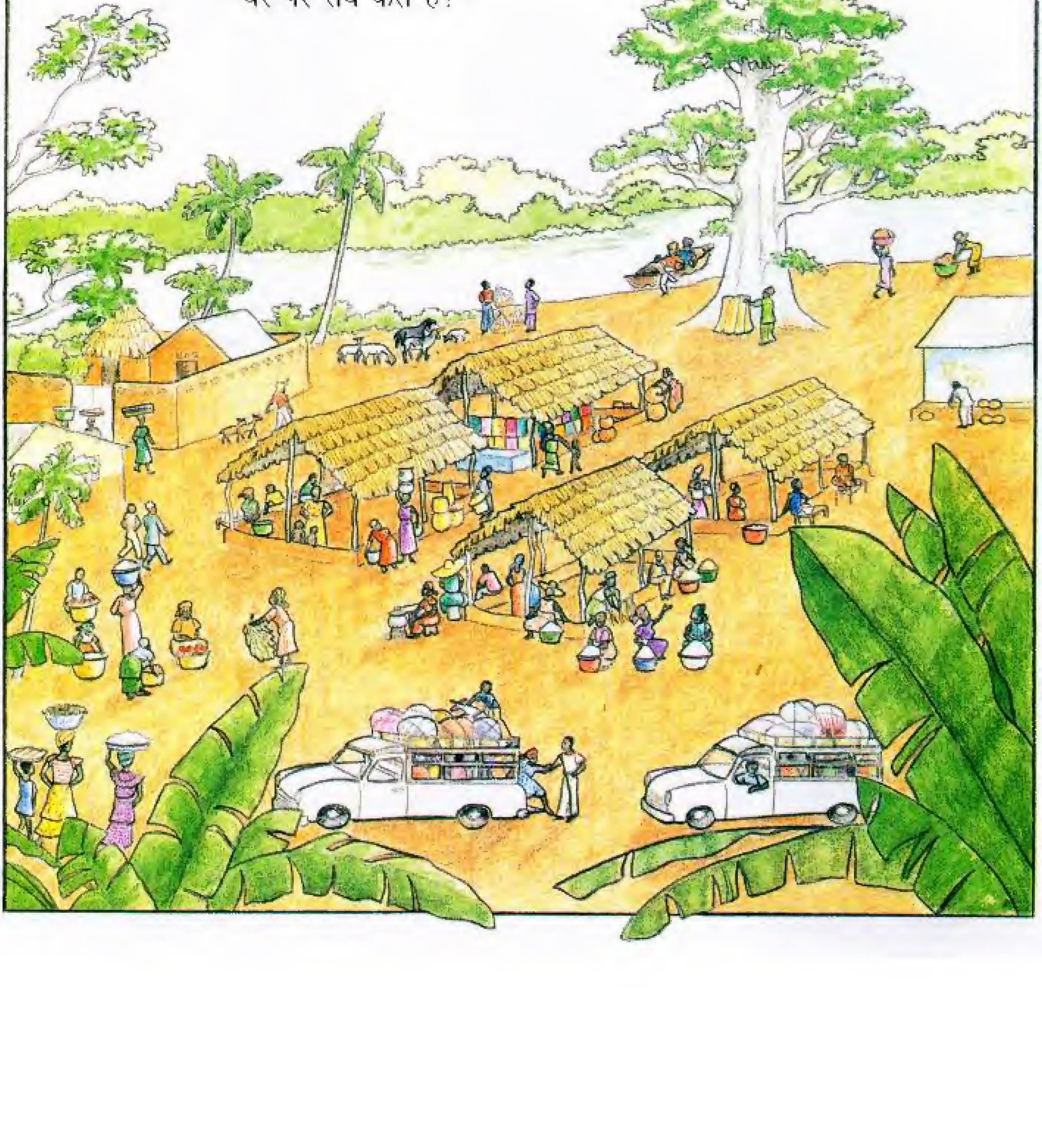

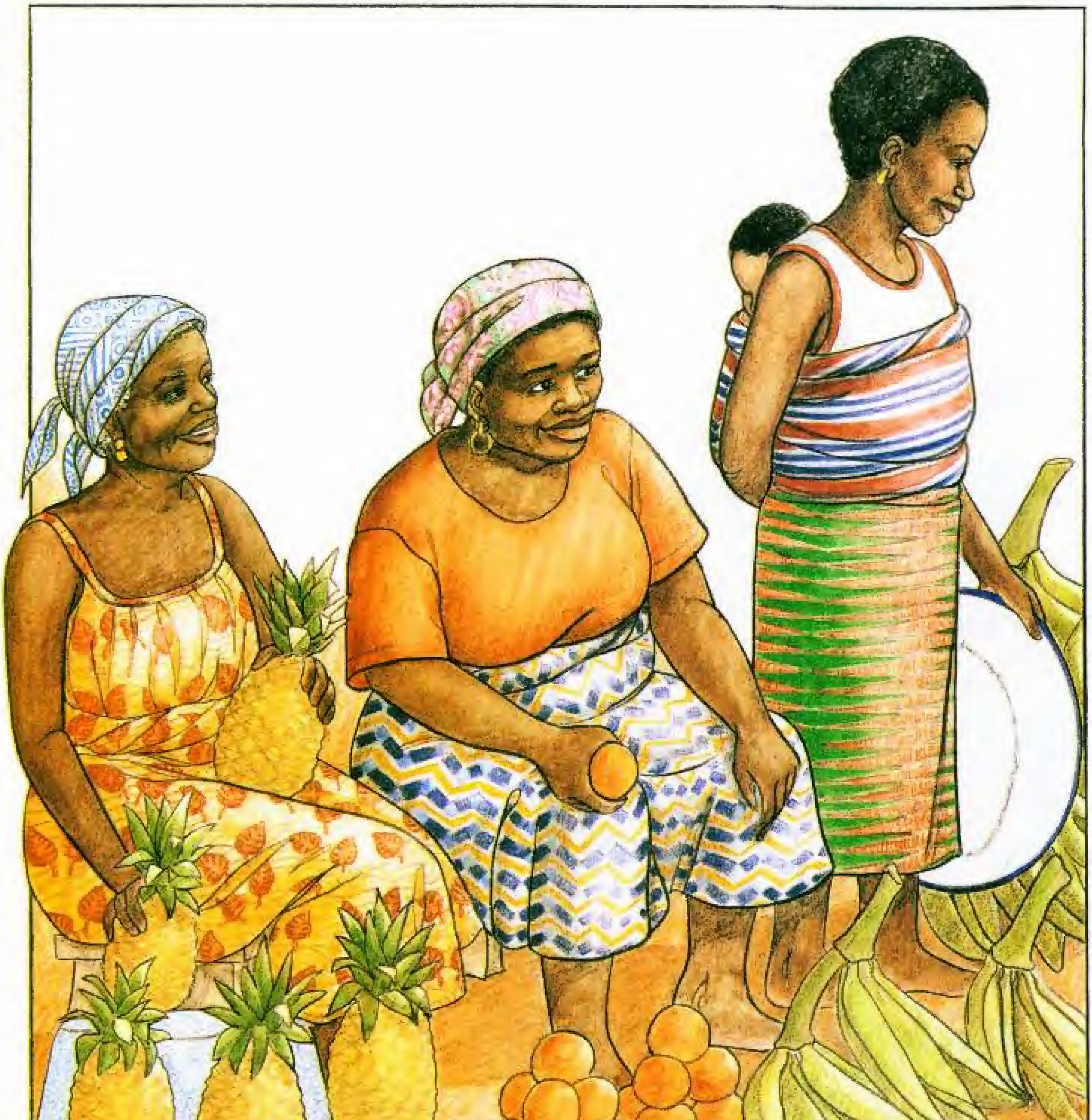

येमी ने माँ को आम ठीक से रखने में मदद की। फल बेचने वाली और औरतों में से एक ने माँ से कहा, "येमी अब बड़ी हो गई है। कितनी मदद करती है तुम्हारी!"

"हाँ," माँ ने कहा, "आज यह कोकू का ध्यान रखेगी।"

"अकेली मैं!" येमी ने जोड़ा।

"अकेली तुम? हाँ, हाँ!" उस औरत को आश्चर्य हुआ। सिर हिलाकर वे मुस्कराईं, क्योंकि उन्हें भी बेहतर पता था।

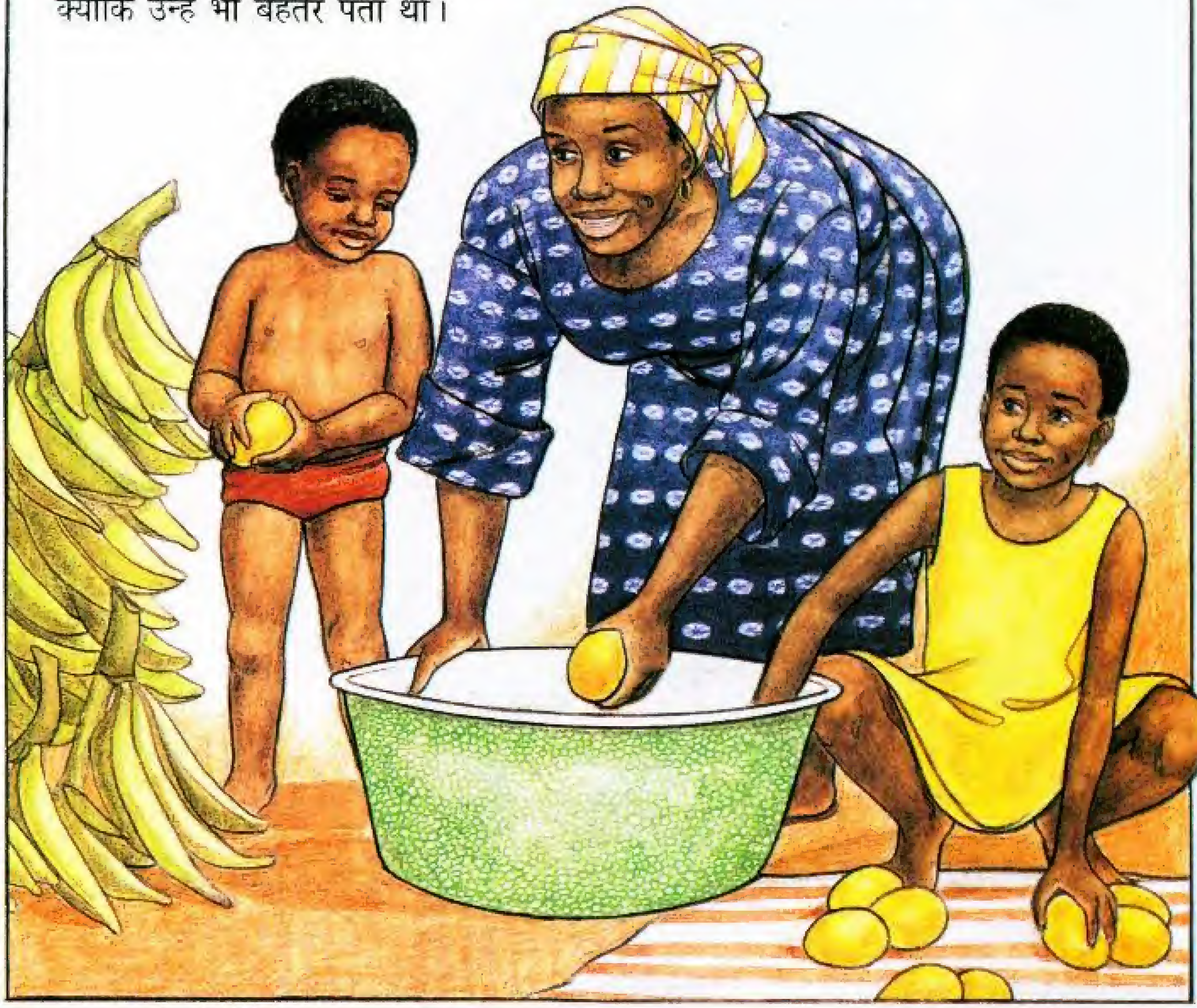

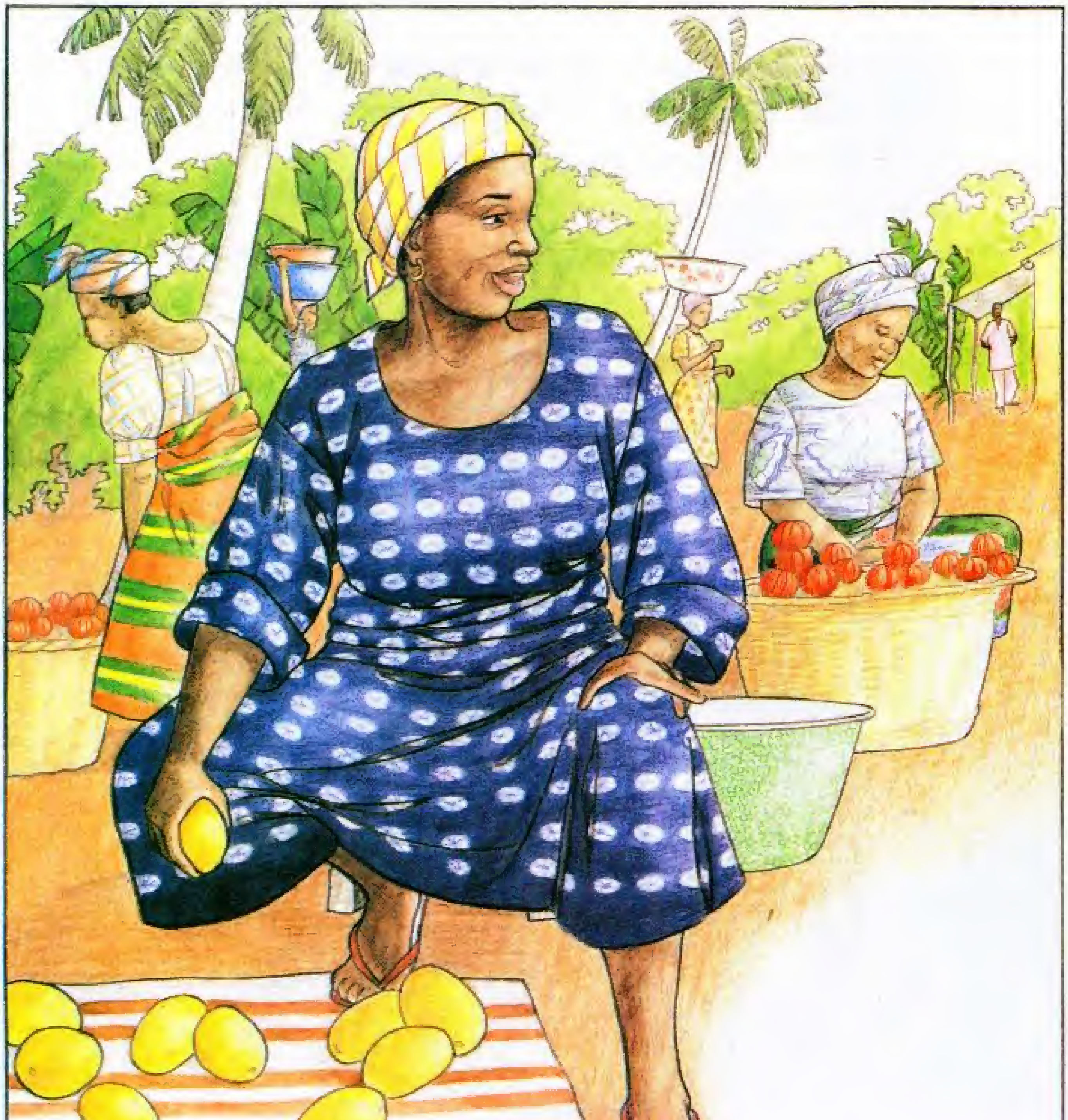

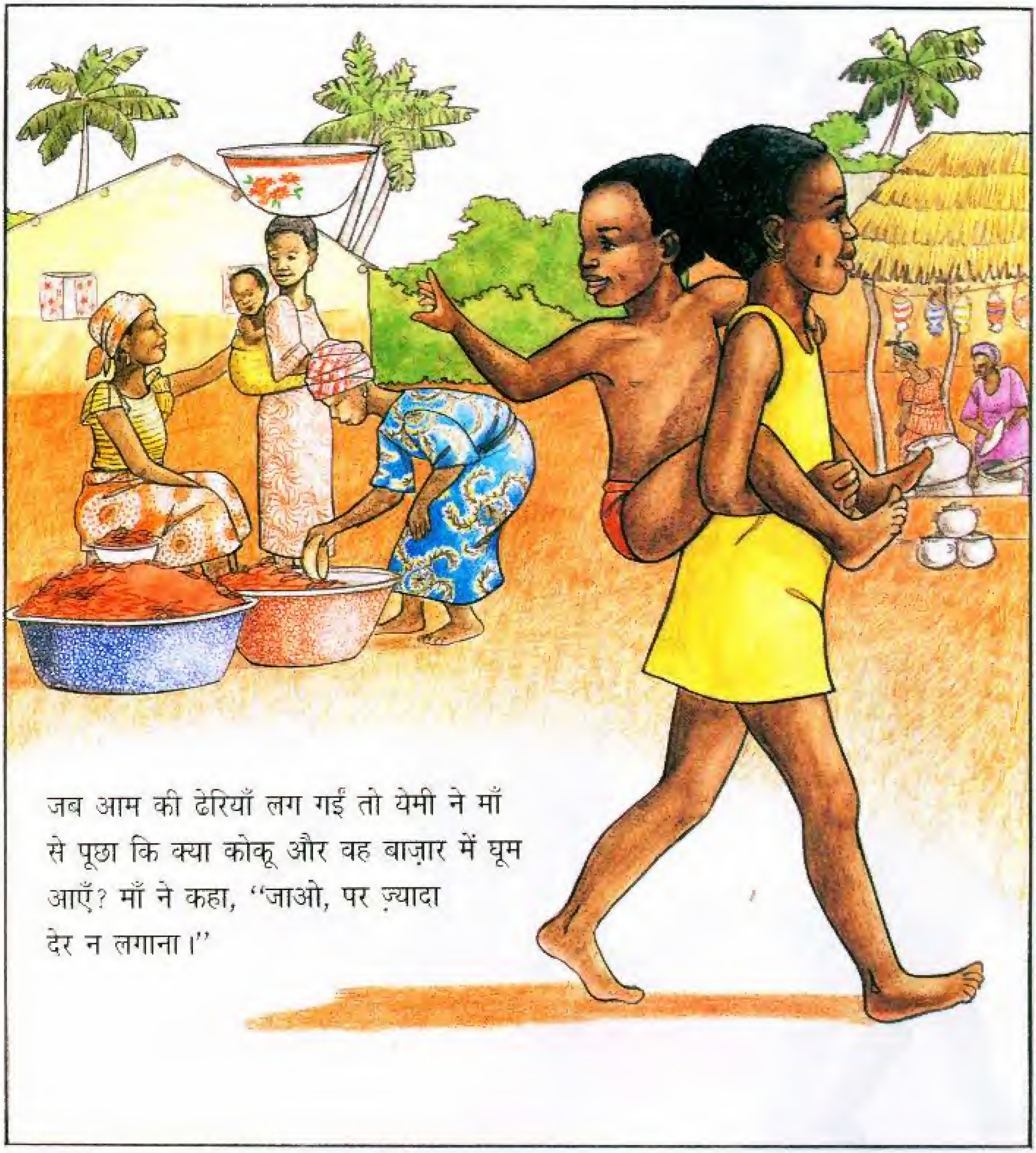

जब आम की ढेरियाँ लग गईं तो येमी ने माँ से पूछा कि क्या कोकू और वह बाज़ार में घूम आएँ? माँ ने कहा, "जाओ, पर ज़्यादा देर न लगाना।"

वे ज़्यादा दूर नहीं गए थे कि कोकू कुनमुनाने लगा। "इसे ज़रूर भूख लगी है," येमी ने सोचा। उसे थोड़ी देर के लिए नीचे रखकर, वह मूँगफली खरीदने लगी...

... और कोकू वहाँ से चल दिया।

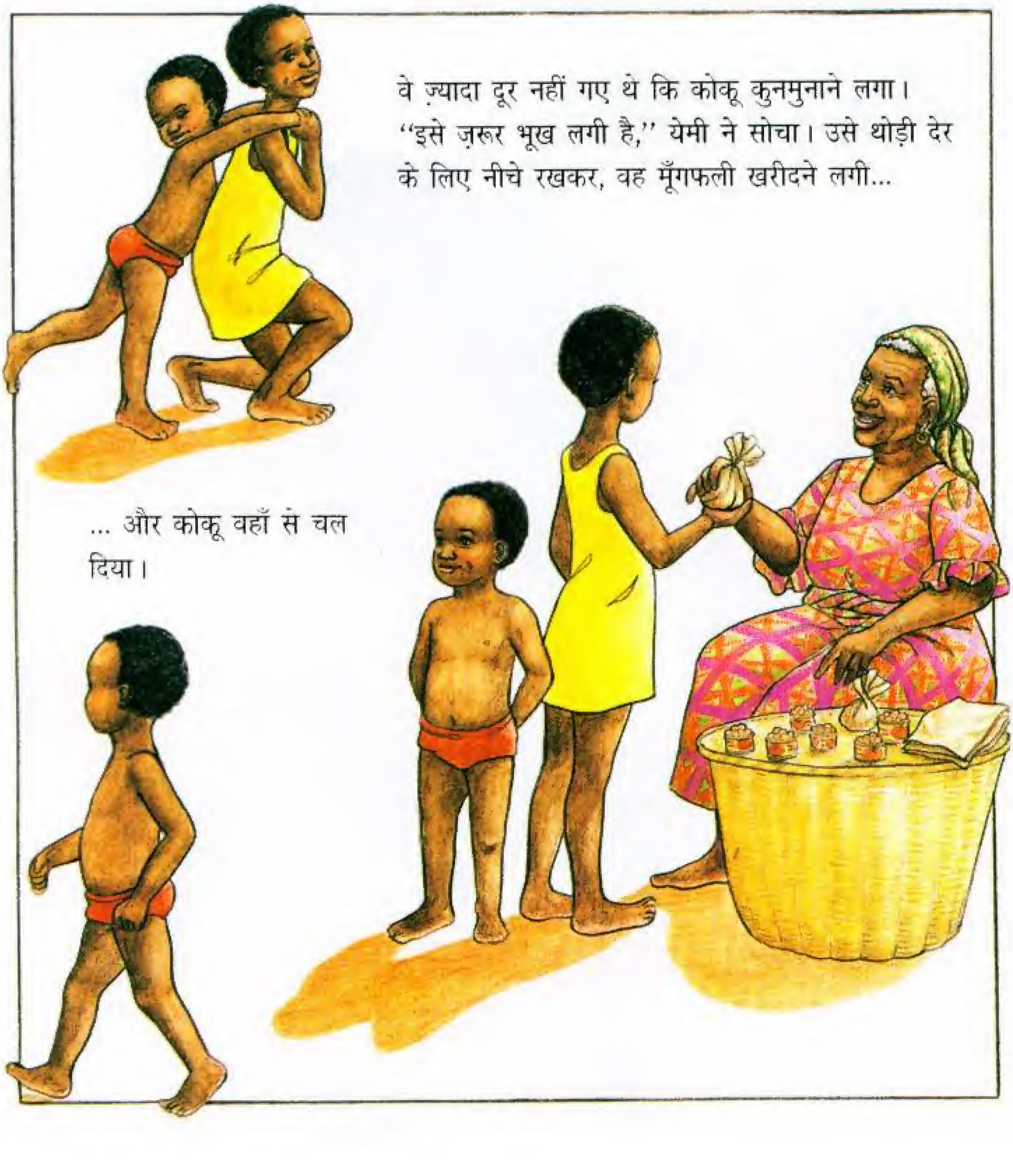

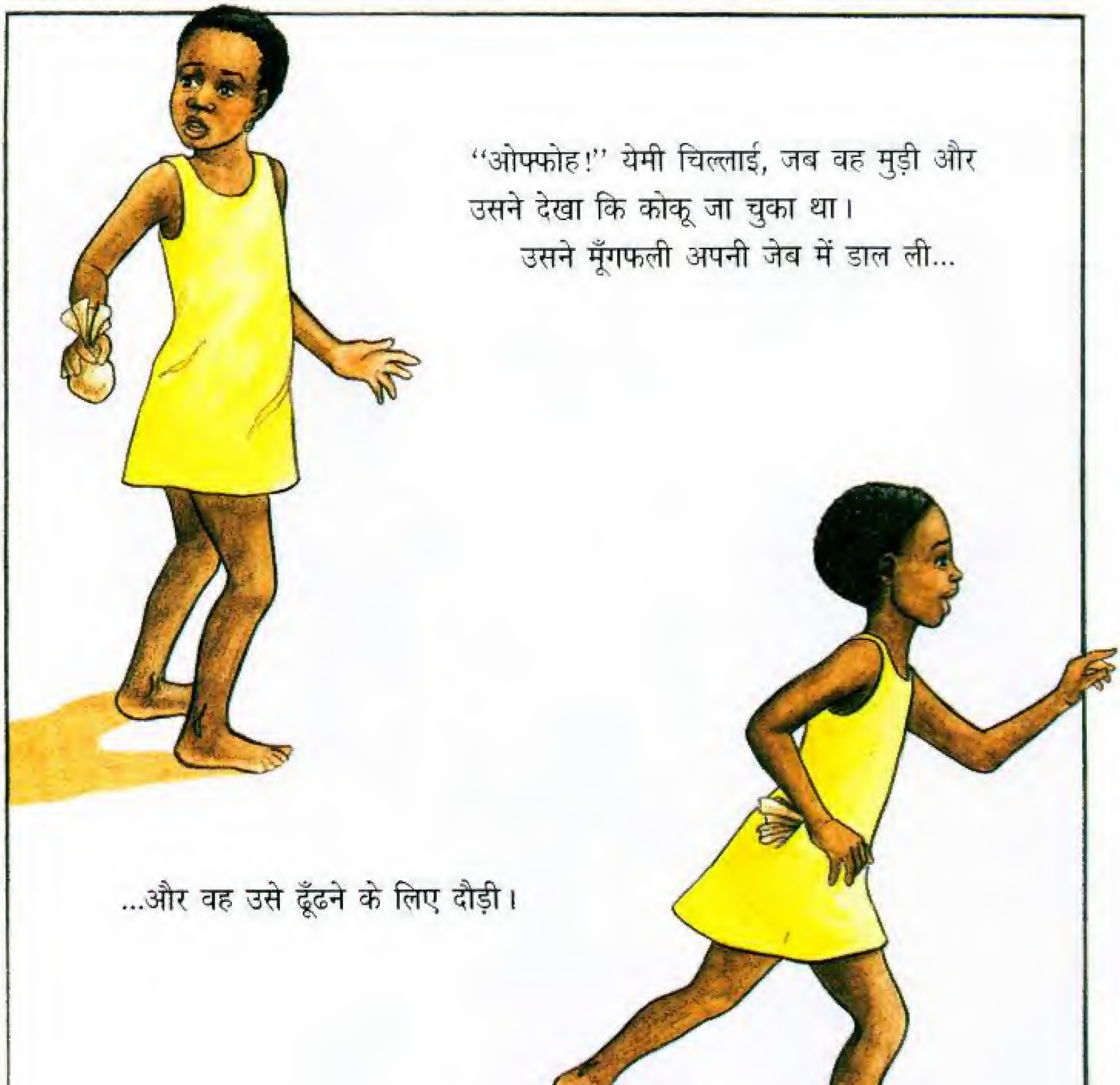

"ओफ्फोह!" येमी चिल्लाई, जब वह मुड़ी और उसने देखा कि कोकू जा चुका था।

उसने मूँगफली अपनी जेब में डाल ली...

...और वह उसे ढूँढने के लिए दौड़ी।

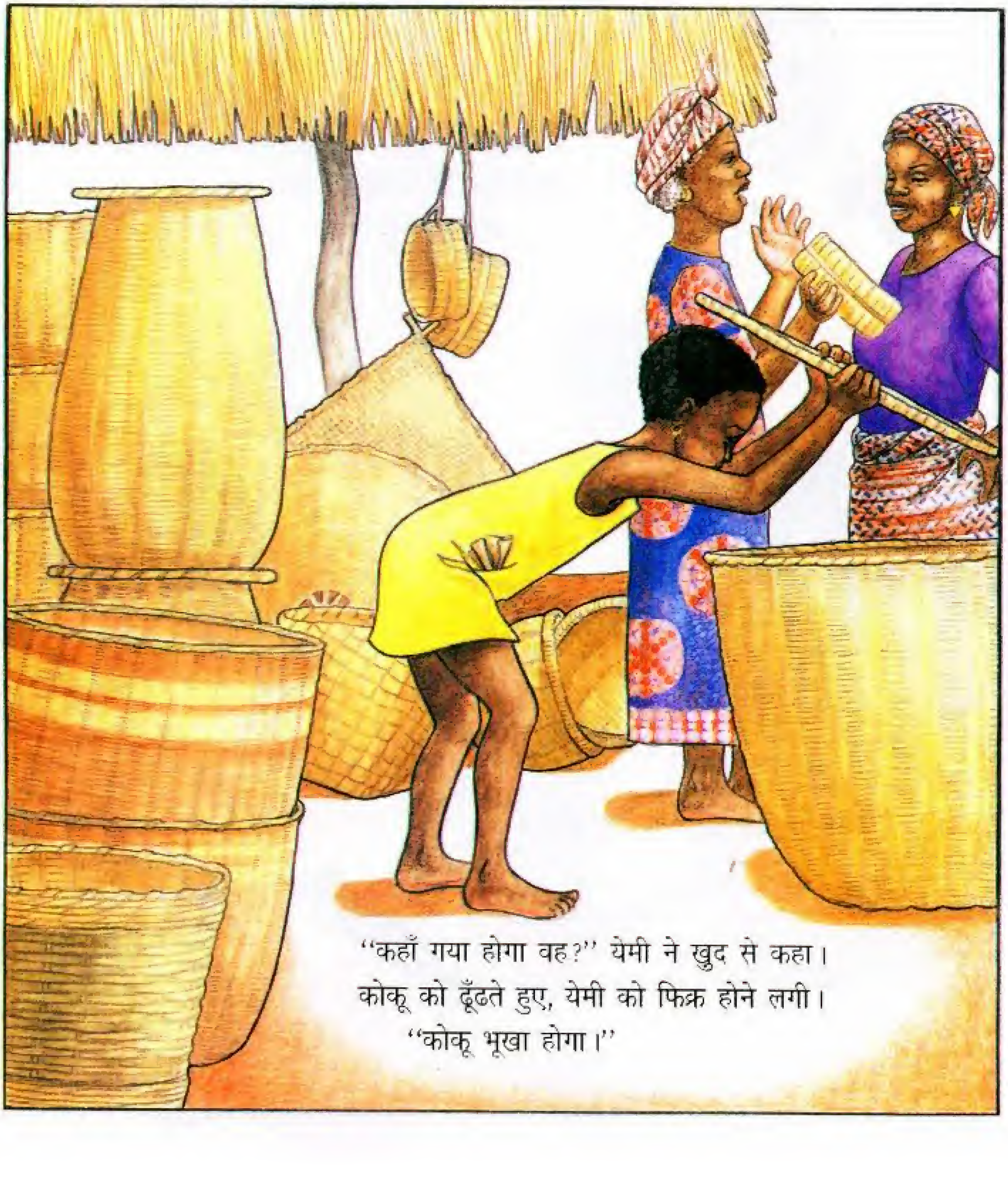

"कहाँ गया होगा वह?" येमी ने खुद से कहा।
कोकू को ढूँढते हुए, येमी को फिक्र होने लगी।
"कोकू भूखा होगा।"

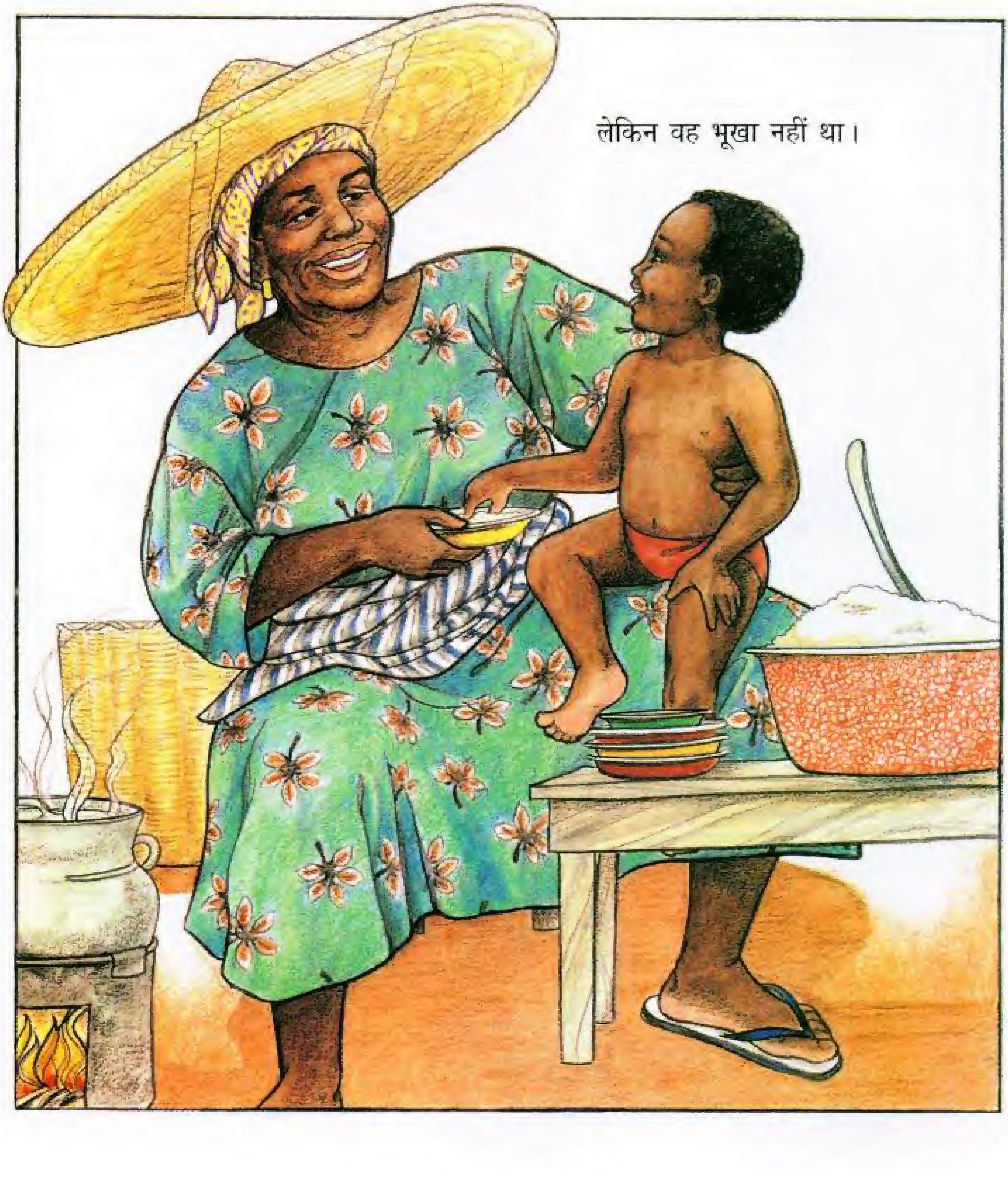

लेकिन वह भूखा नहीं था।

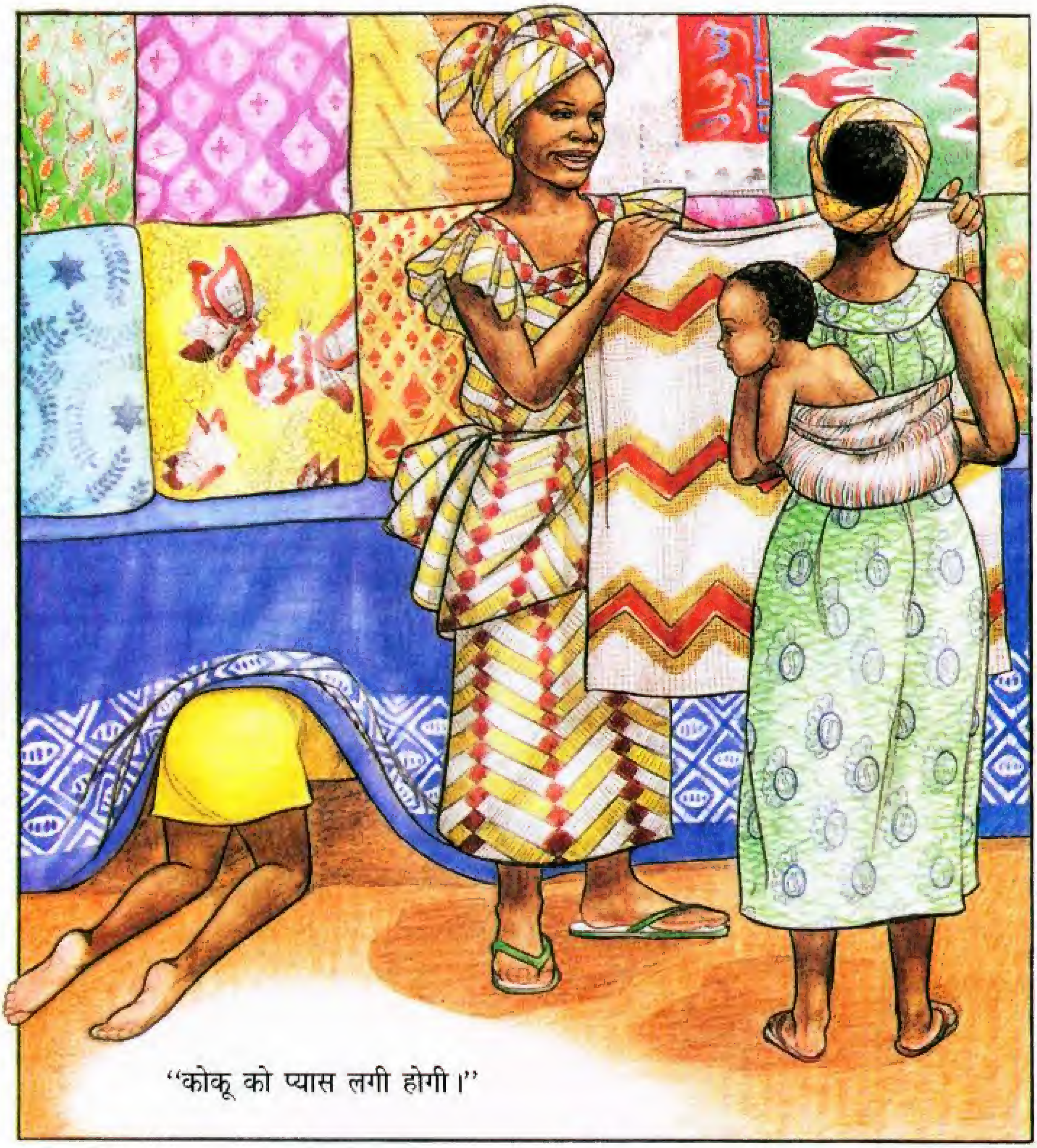

"कोकू को प्यास लगी होगी।"

लेकिन उसे प्यास नहीं लगी थी।

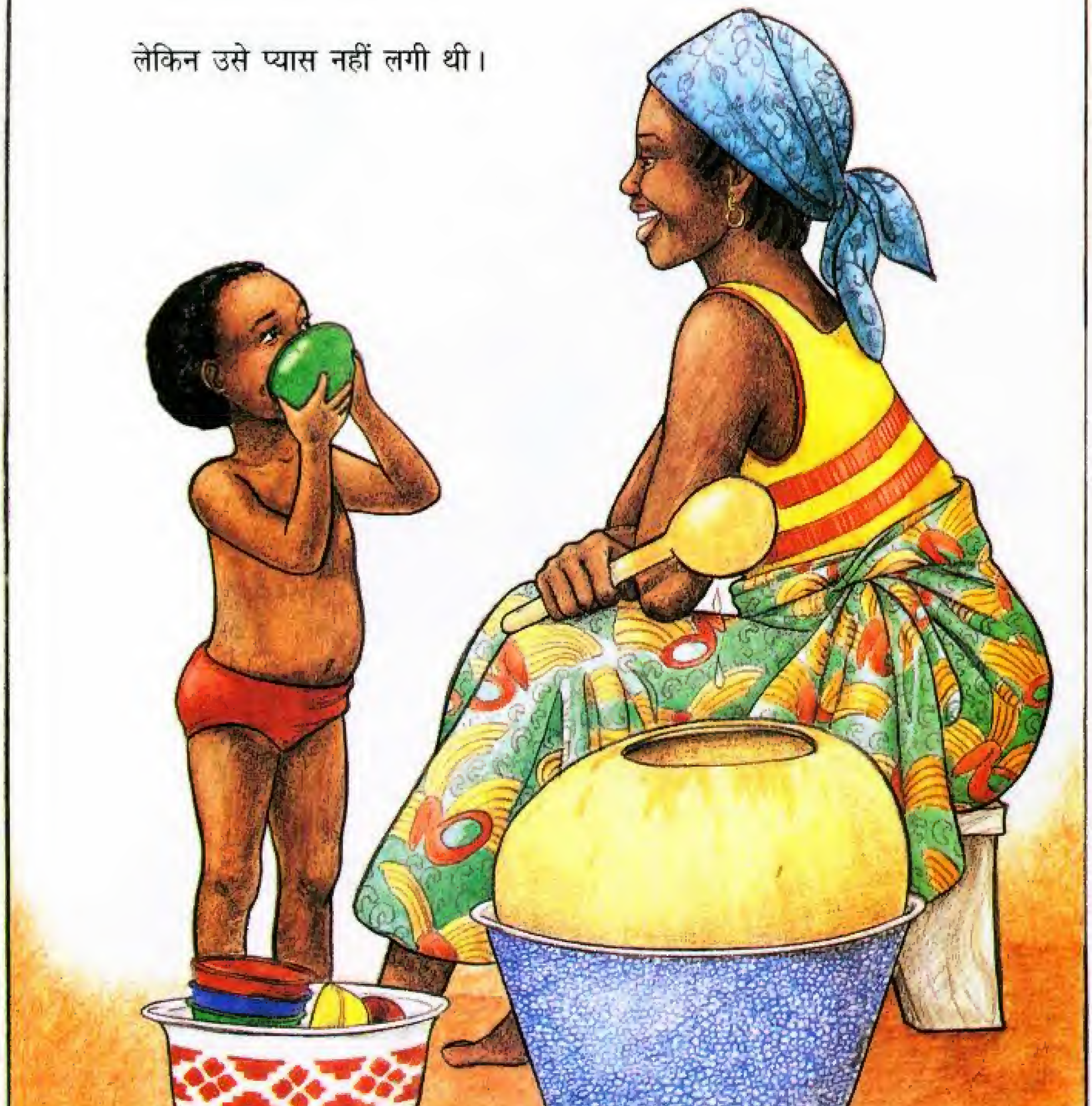

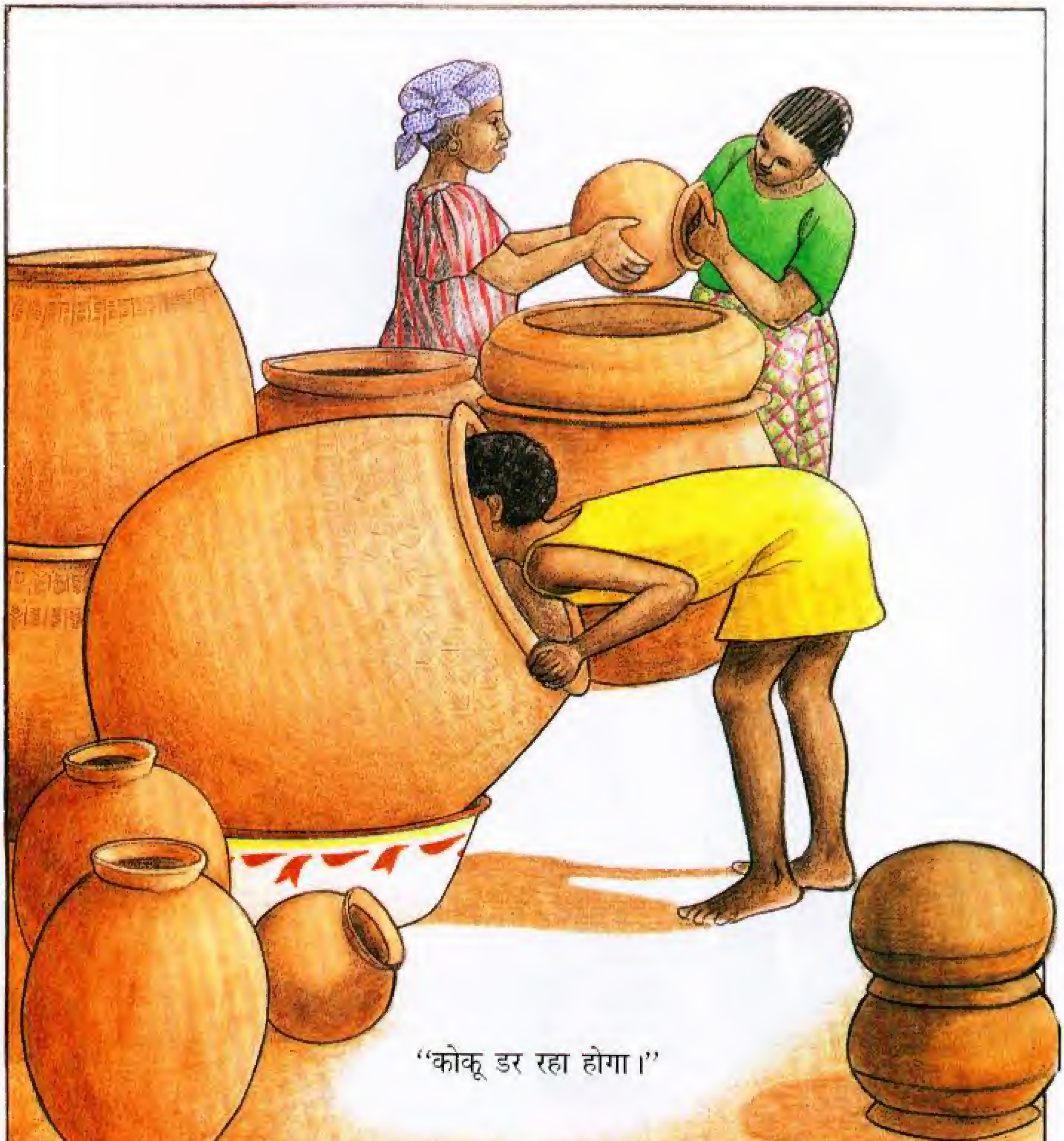
"कोकू डर रहा होगा।"

लेकिन वह डरा हुआ नहीं था।

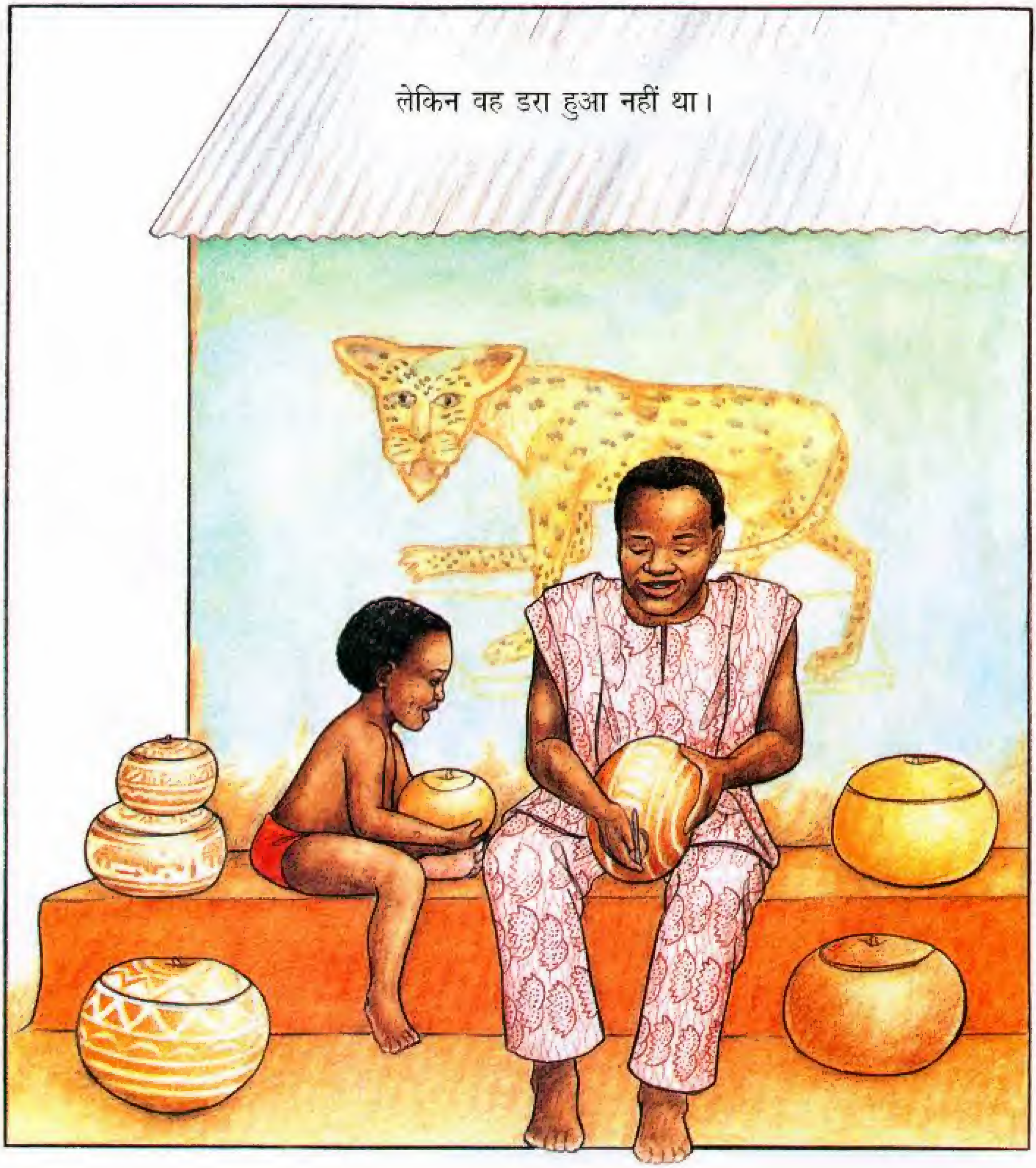

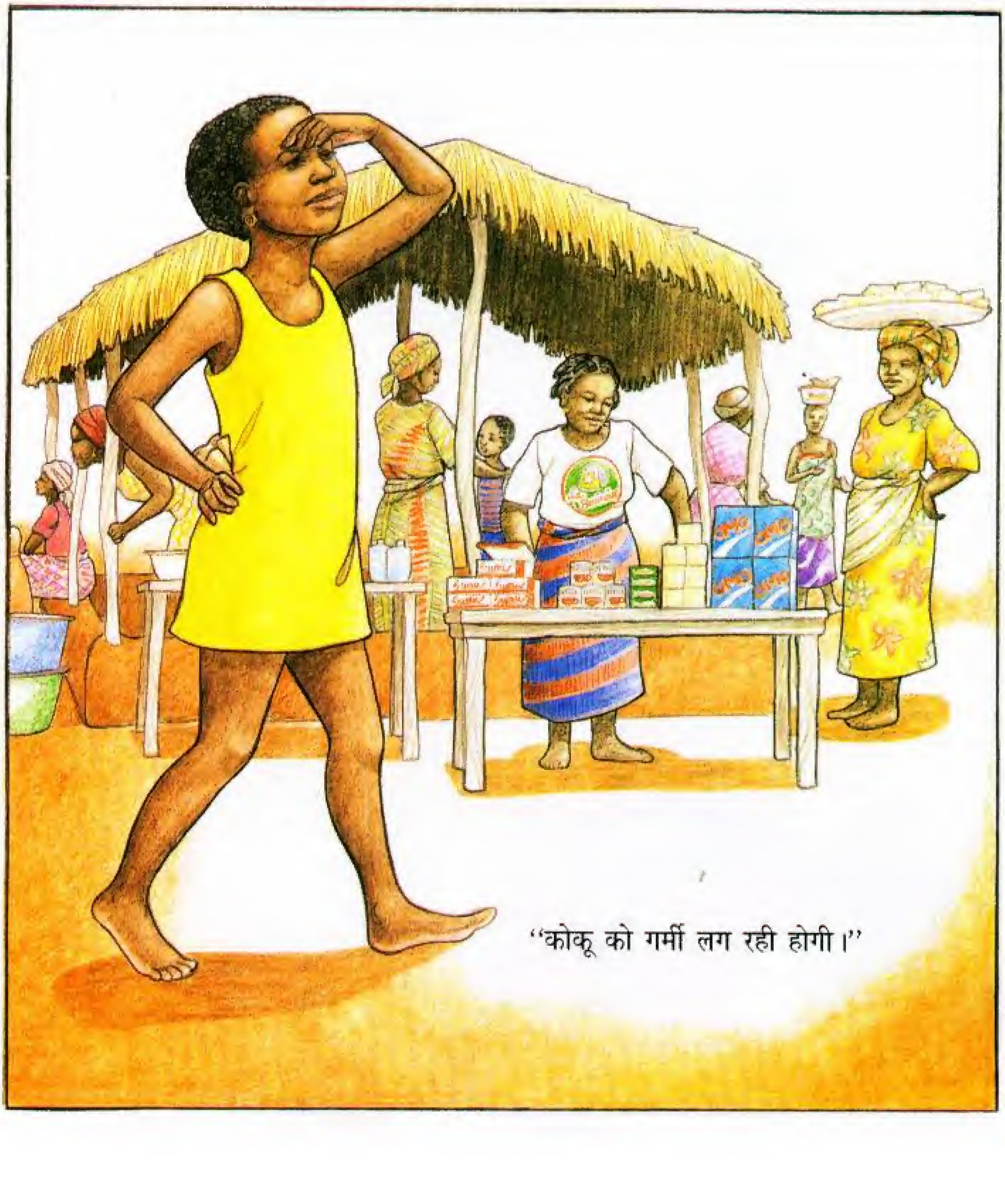

"कोकू को गर्मी लग रही होगी।"

लेकिन उसे गर्मी नहीं लग रही थी।

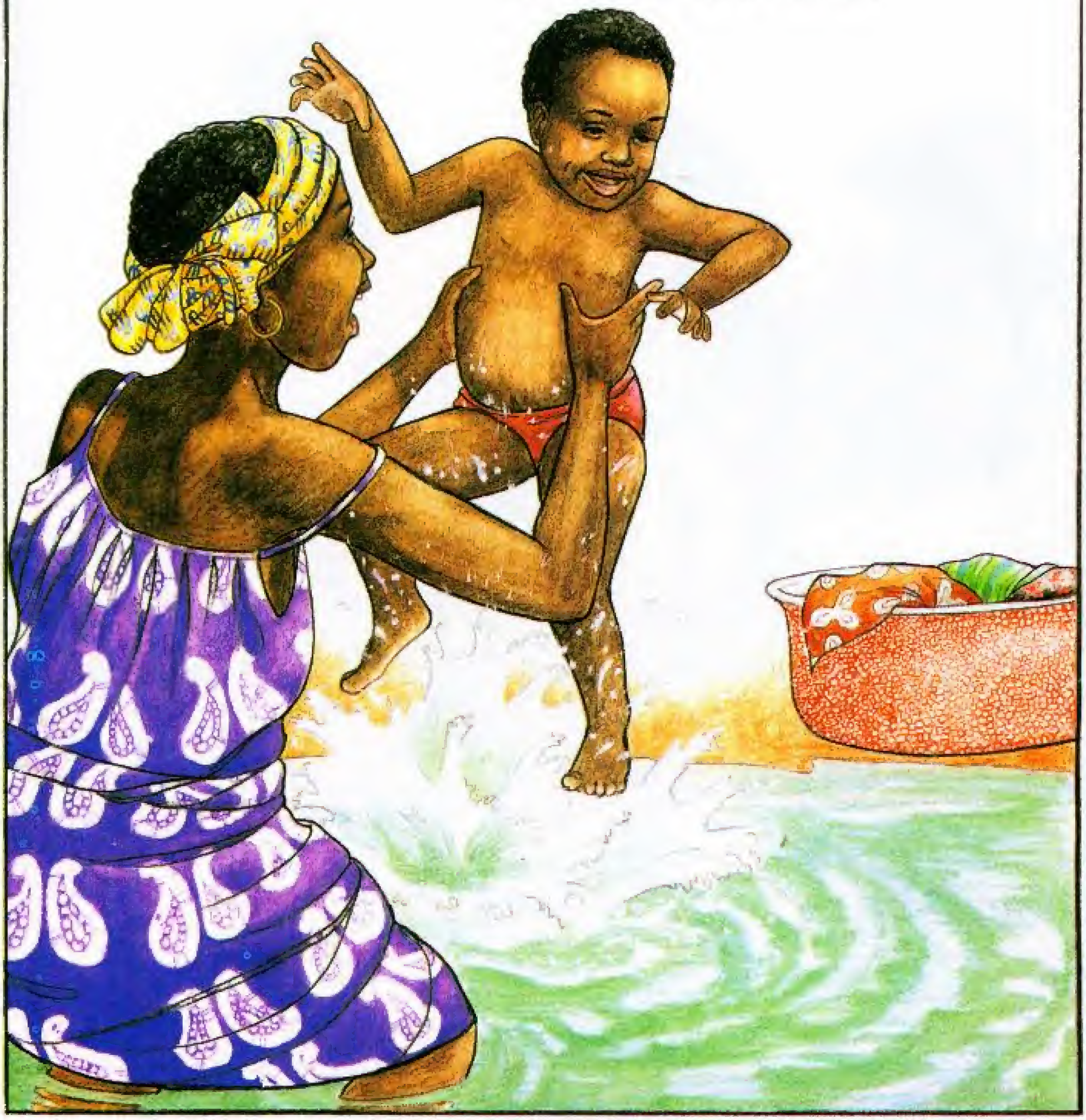

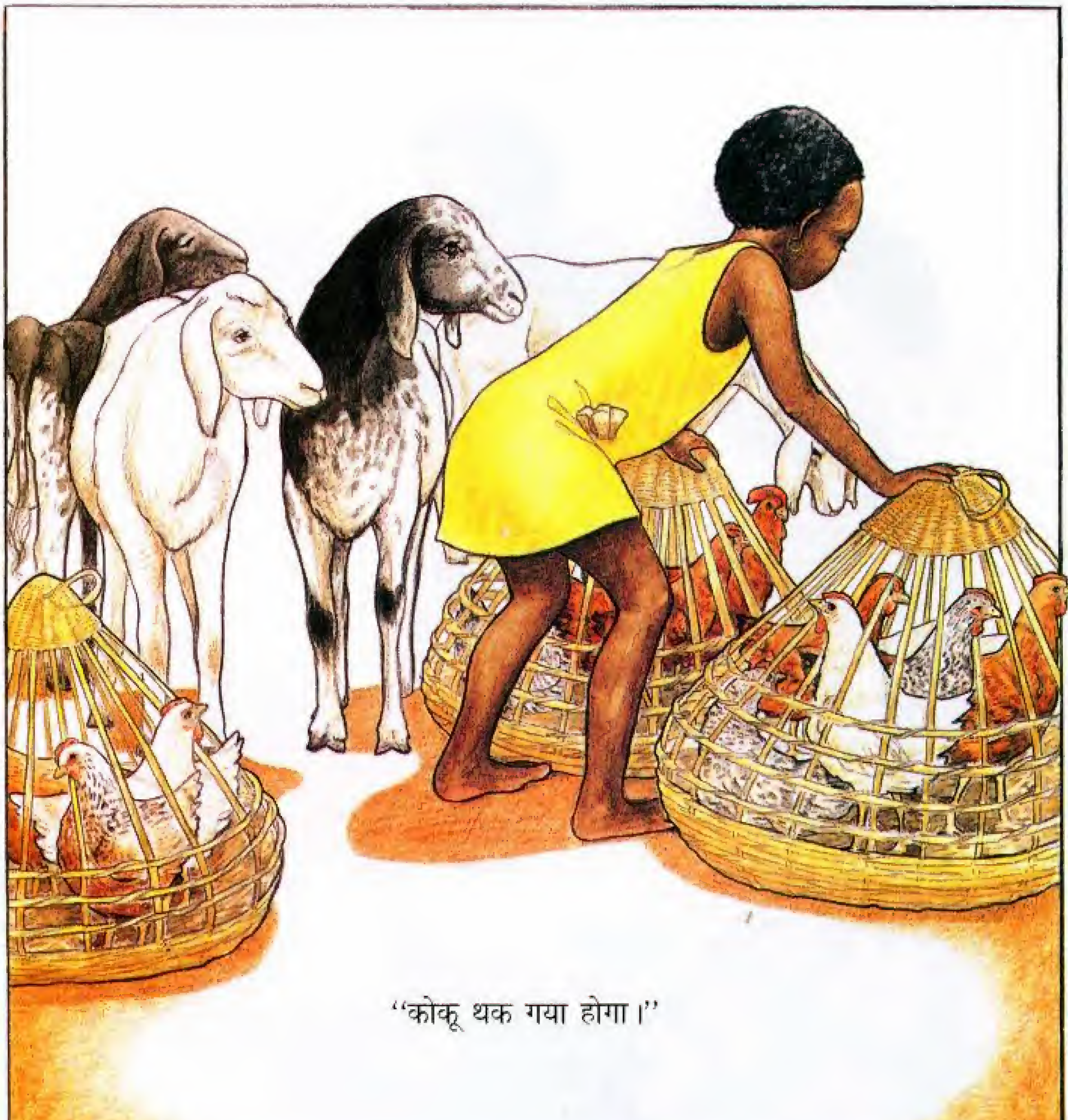

“कोकू थक गया होगा।”

लेकिन वह थका नहीं था।

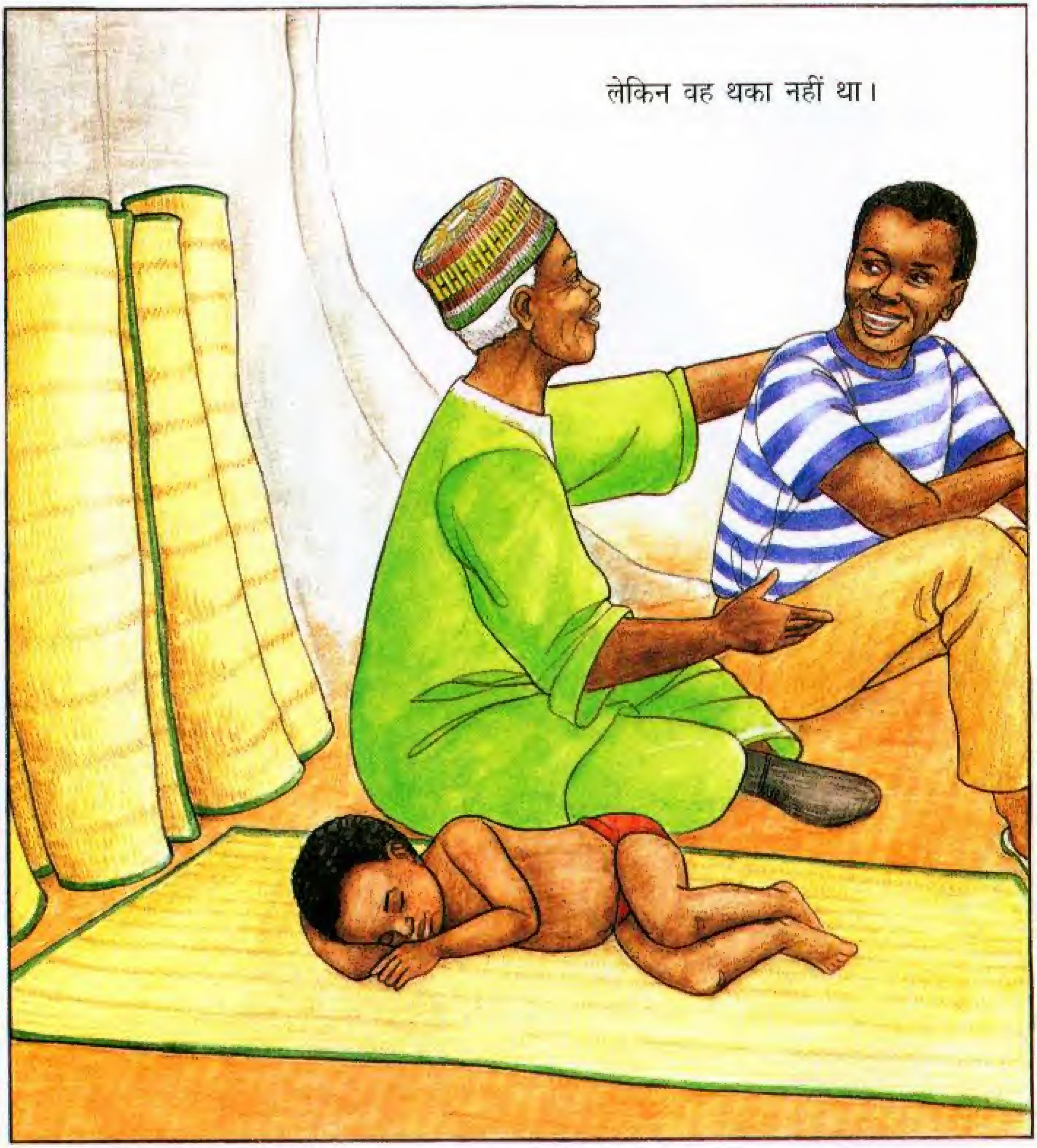

आखिरकार, जब वह उसे हर जगह ढूँढ चुकी,
येमी रुकी और ज़ोर से चिल्लाई, "कोकू खो गया है!"

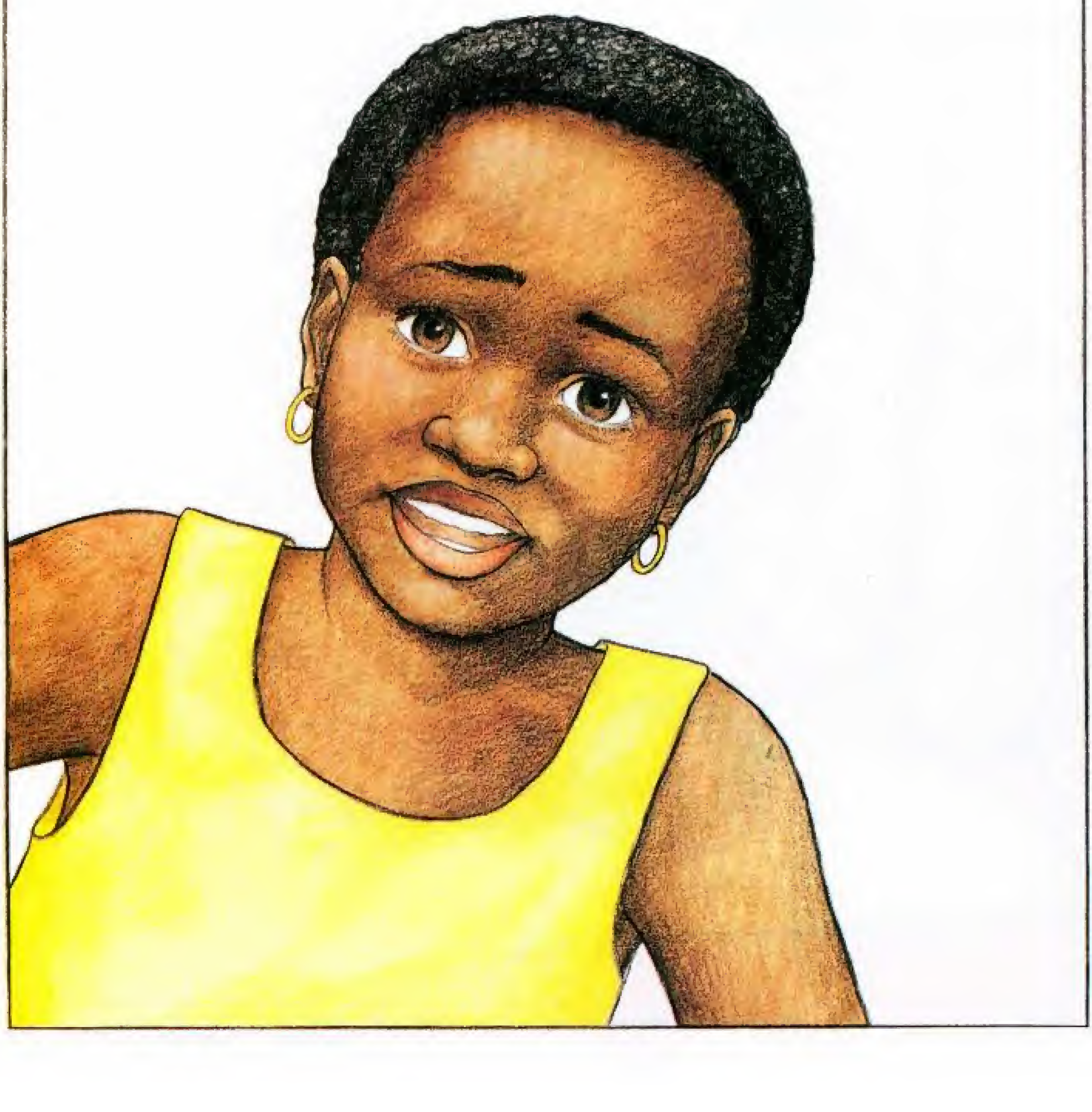

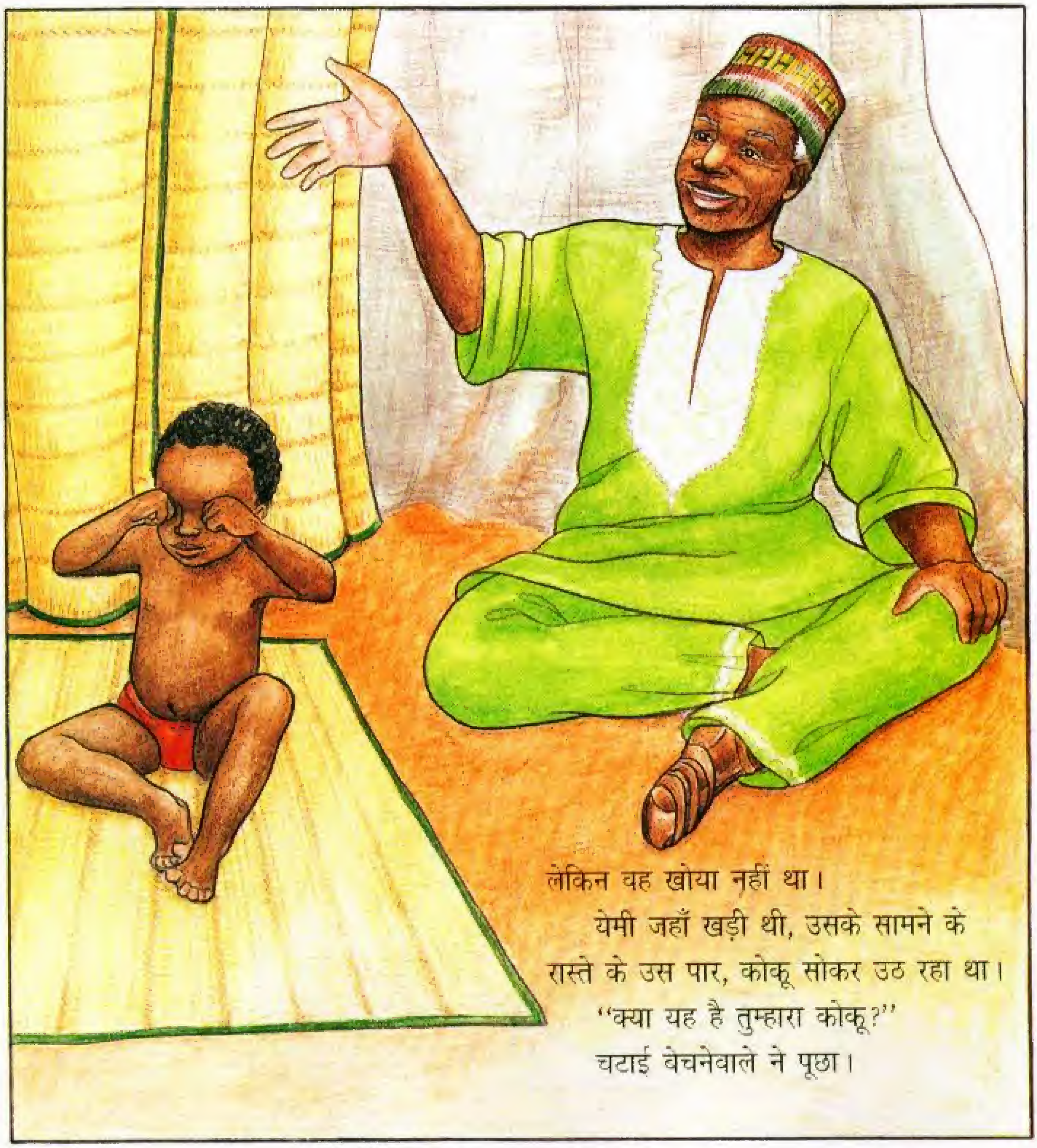

लेकिन वह खोया नहीं था।

येमी जहाँ खड़ी थी, उसके सामने के रास्ते के उस पार, कोकू सोकर उठ रहा था।

"क्या यह है तुम्हारा कोकू?"

चटाई बेचनेवाले ने पूछा।

कोकू को प्यार से उठाते हुए
येमी चिल्लाई, ''जी, हाँ!''

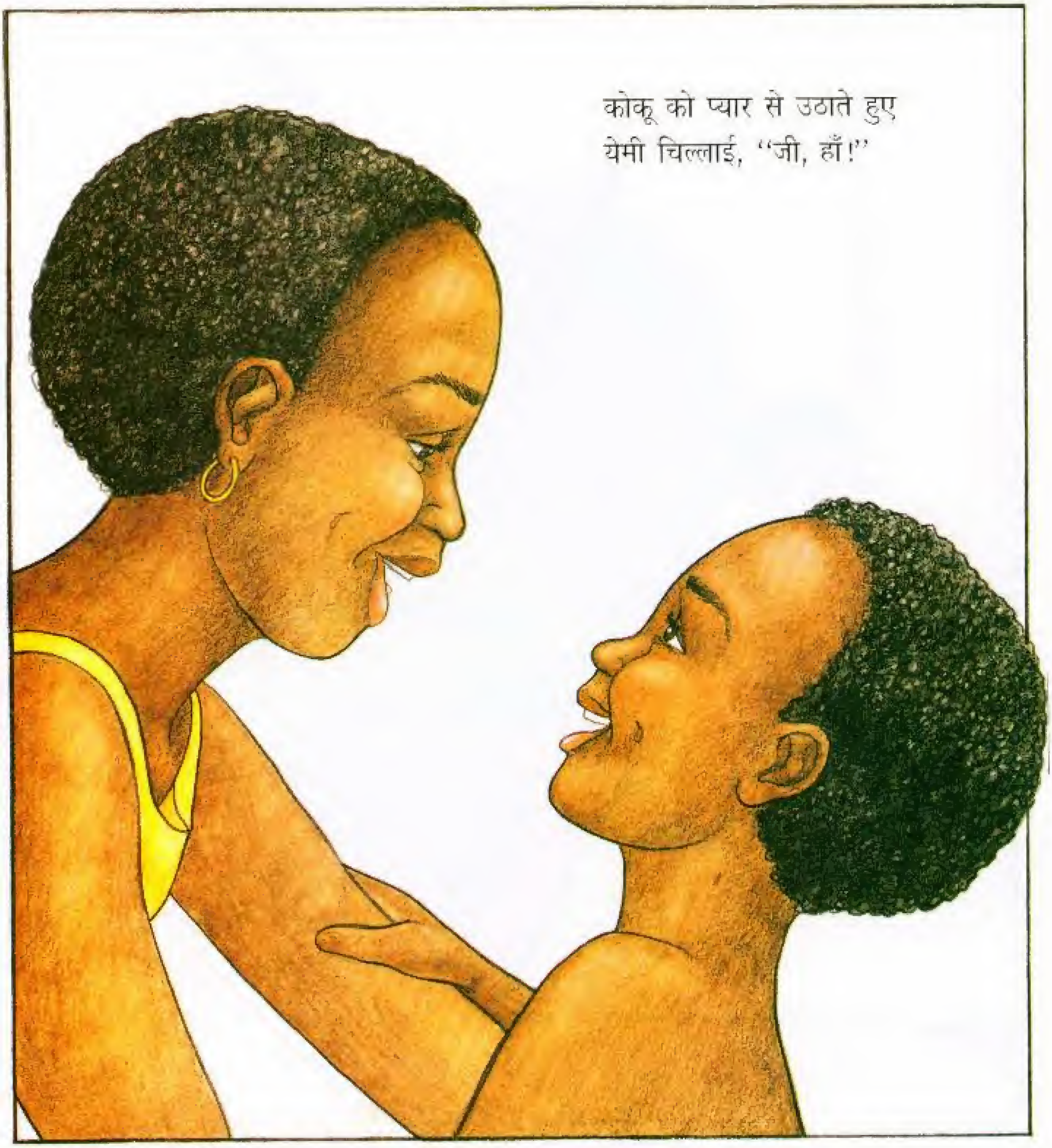

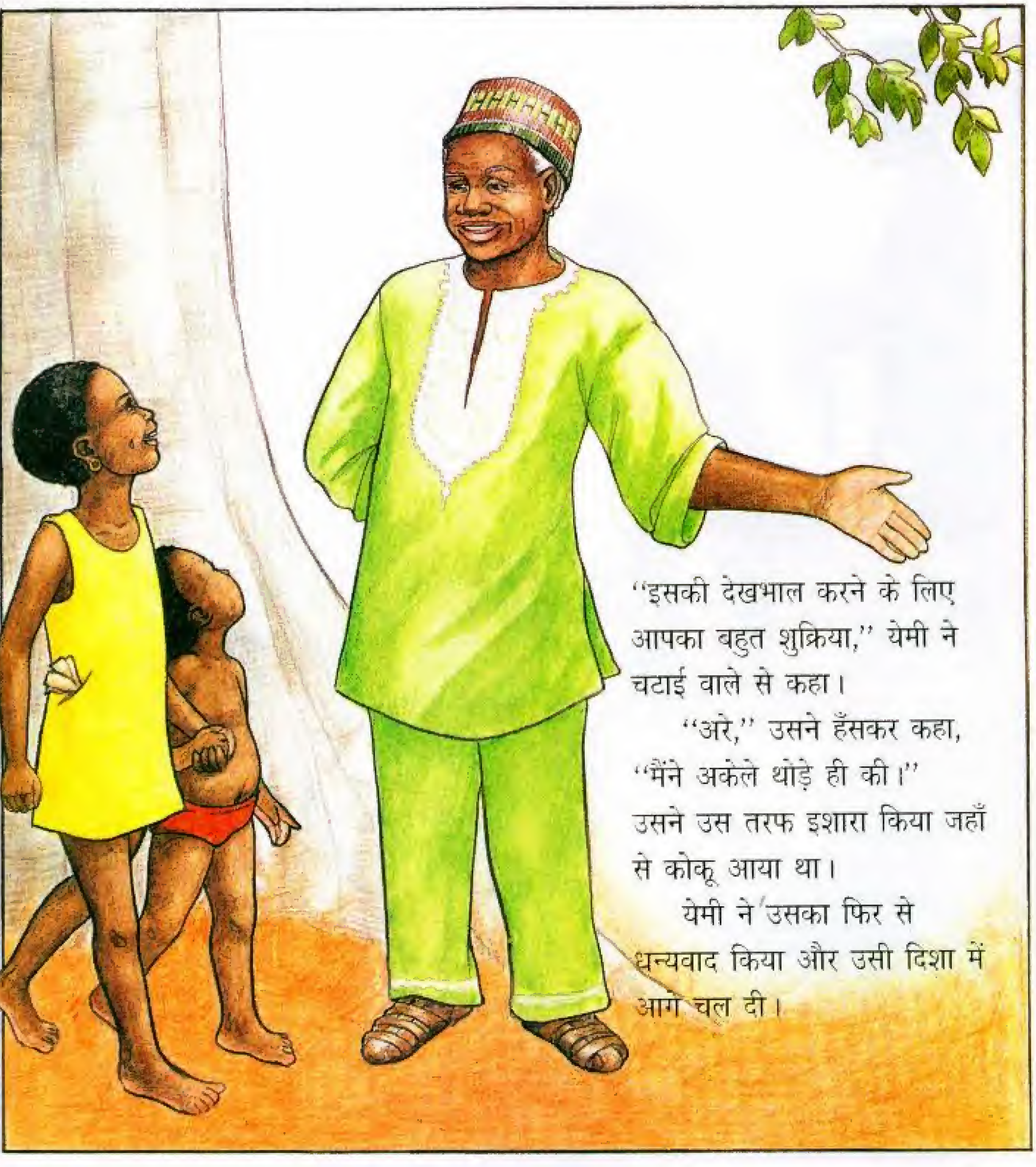

"इसकी देखभाल करने के लिए आपका बहुत शुक्रिया," येमी ने चटाई वाले से कहा।

"अरे," उसने हँसकर कहा, "मैंने अकेले थोड़े ही की।" उसने उस तरफ इशारा किया जहाँ से कोकू आया था।

येमी ने उसका फिर से धन्यवाद किया और उसी दिशा में आगे चल दी।

उसने कहा, "धन्यवाद,"
और एक बार...

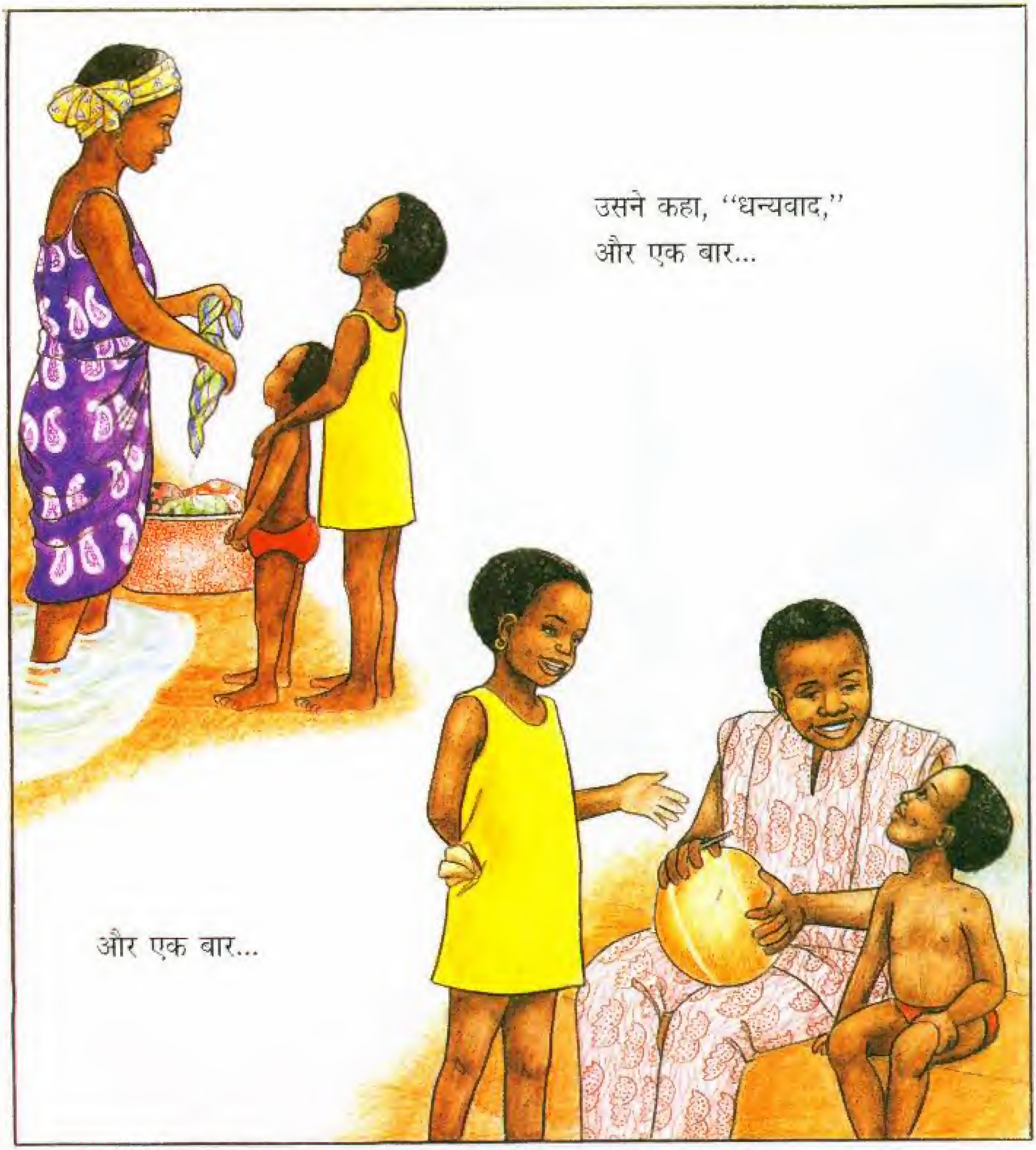

और एक बार...

और एक बार...

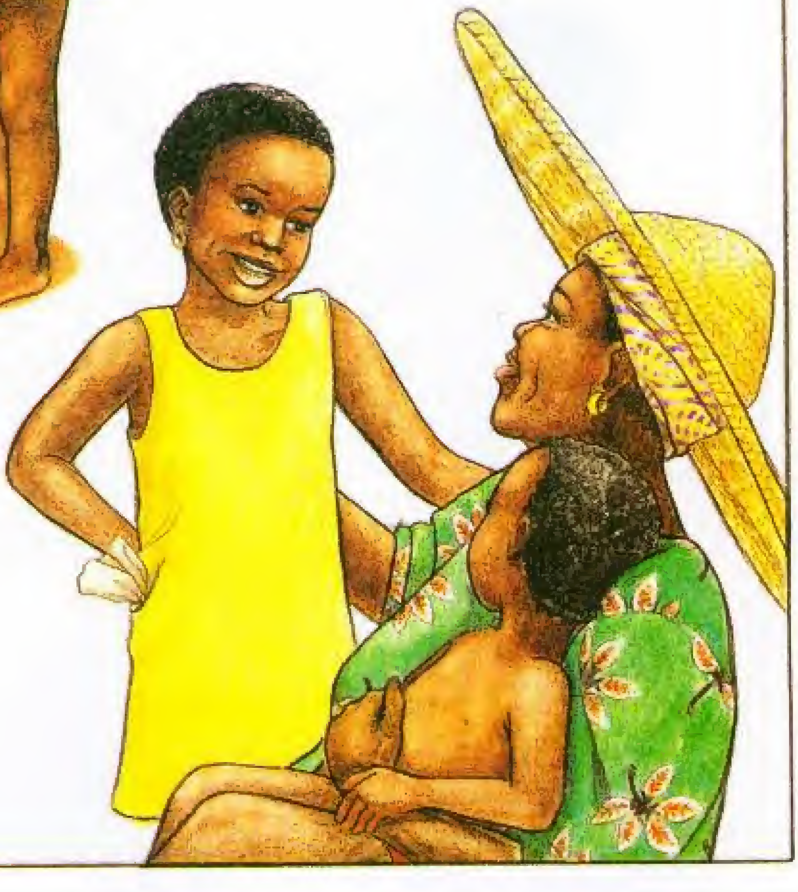

और एक बार।

"हम जाने कब से घूम रहे हैं, कोकू," येमी ने कहा।
"माँ फिक्र कर रही होगी।"

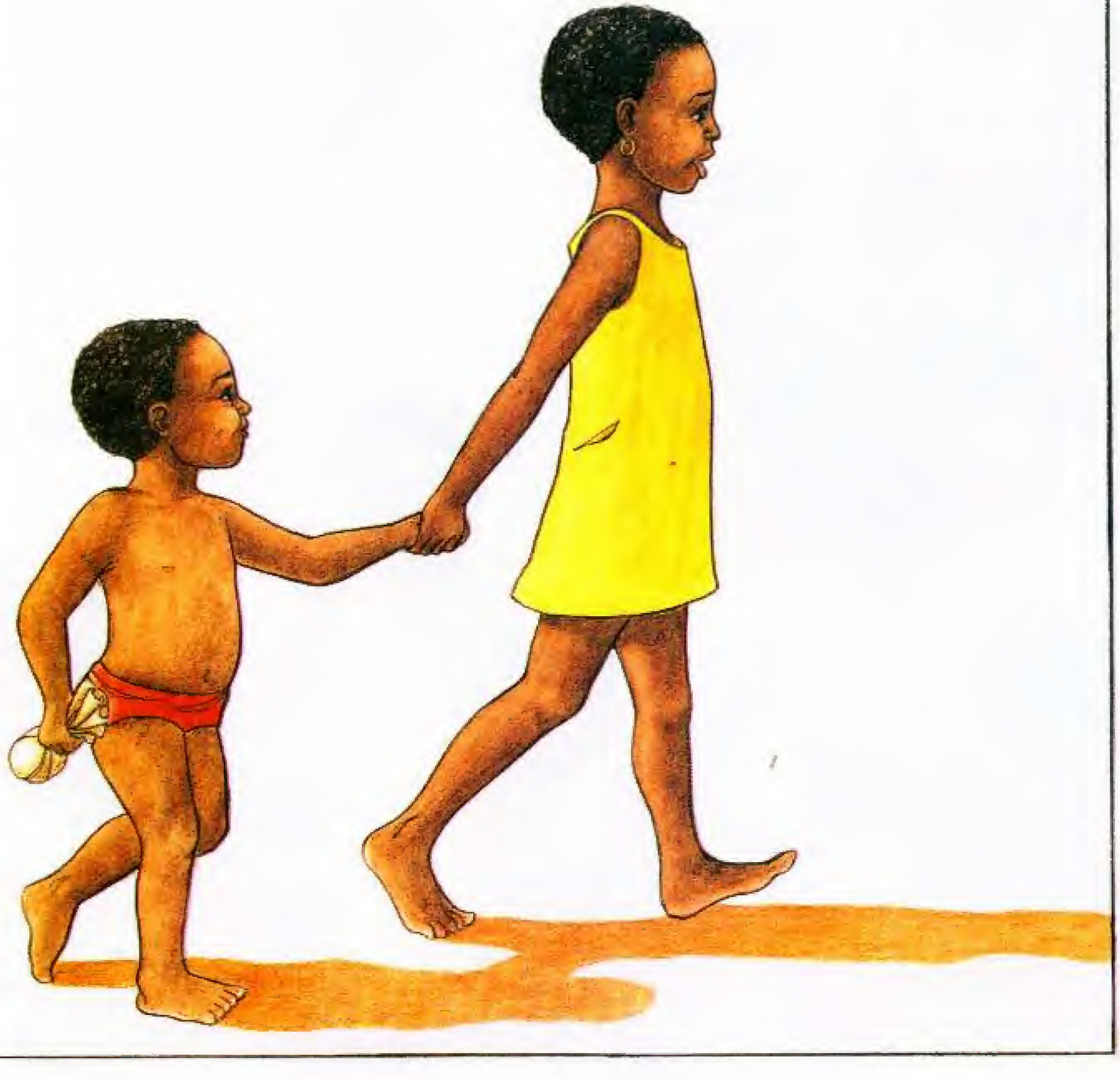

लेकिन उसे फिक्र नहीं थी। वह बेहतर जानती थी। "यह मेरी माँ ने मुझे बताया था, और उसकी माँ ने उसे बताया था, और अब मैं तुम्हें बता रही हूँ। आज तुम अकेली नहीं थी, येमी! हम अपने बच्चे खुद नहीं पालते! 'पूरा गाँव लगता है, एक बच्चे को पालने में।' "

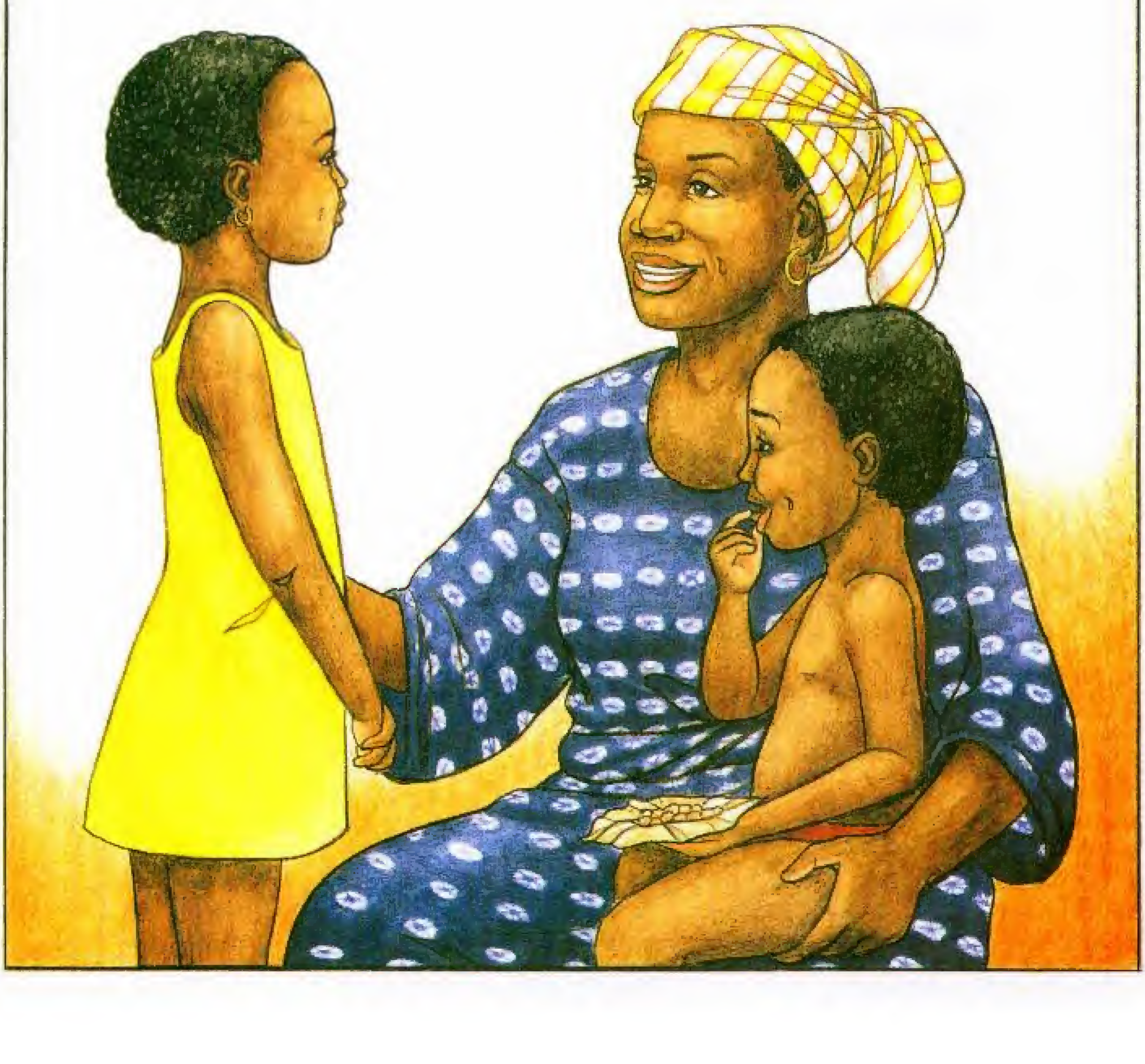

हमारे देश की तरह, अफ्रीका के गाँवों में भी लोग मिल-जुलकर रहते हैं। पूरा गाँव एक परिवार की तरह होता है। यह उसी भाईचारे की कहानी है।

सप्ताह में एक या दो बार हाट लगता है – न केवल हमारे गाँवों में, हमारे शहरों के अलग-अलग मोहल्लों में भी। इसी तरह अफ्रीका के गाँवों में भी बाज़ार लगता है। वहाँ खरीदने और बेचने वाले, वहीं आस-पास के लोग होते हैं। तरह-तरह की चीज़ें वहाँ मिलती हैं और उनसे लोग अपनी खाने-पीने और पहनने की ज़रूरतें पूरी करते हैं।

बाज़ार का दिन एक-दूसरे से मिलने-जुलने और हाल-चाल जानने का दिन भी होता है। रिश्तेदारों, दोस्तों और परिचितों से मेल-मिलाप का दिन।

अफ्रीका की एक कहावत है, ''एक बच्चे के लालन-पालन में पूरा गाँव लगता है।'' कोकू की यह कहानी इस बात को सिद्ध करती है।

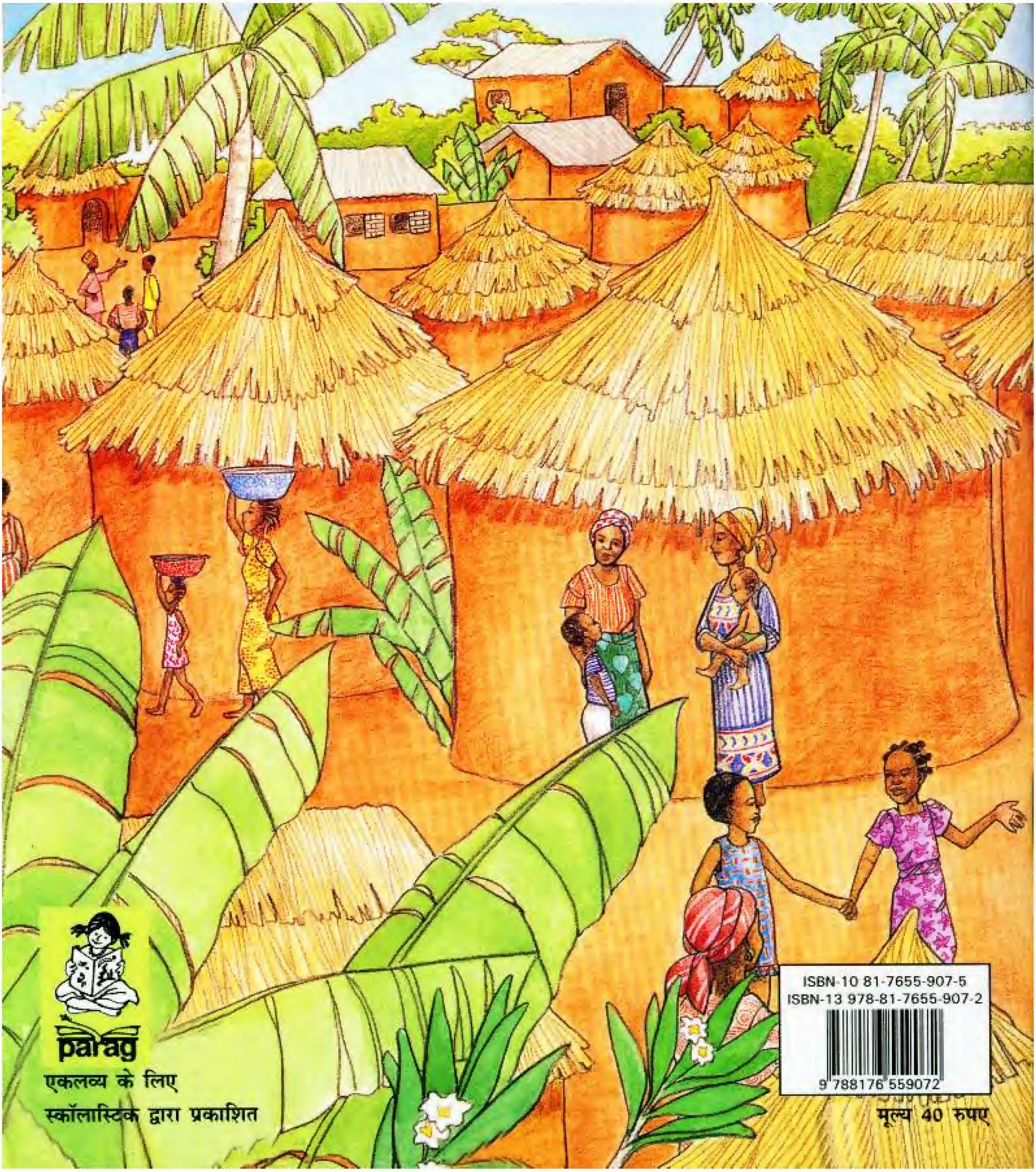

parag
एकलव्य के लिए
स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित

ISBN-10 81-7655-907-5
ISBN-13 978-81-7655-907-2
9 788176 559072

मूल्य 40 रुपए